विशिष्ट आलेख

अनुगूँज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष–11, अंक–1 अप्रैल –सितंबर,2020

डॉ. सुमीत जैरथ, आईएएस
सचिव (राजभाषा)
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह
माननीय कुलपति (सेवानिवृत्त)

श्री अजय व्यास
कार्यपालक निदेशक, यूको बैंक

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

नराकास (बैंक), कोलकाता द्वारा 12.08.2020 को "संकट, नेतृत्व और सफलता" विषय पर वेब संगोष्ठी में बीज सम्बोधन हेतु श्री अरुप राहा, एयर चीफ मार्शल (सेवानिवृत्त) भारतीय वायु सेना को सम्मानार्थ प्रदत्त

बैंक द्वारा शुरु किए गए "यूको राजा राममोहन राय भाषा-सेतु सम्मान" से प्रो. शंभुनाथ निदेशक भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता को सम्मानार्थ प्रदत्त

अनुगूंज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष-11, अंक-1 अप्रैल-सितंबर, 2020
एक टीम,एक स्वप्न,एक लक्ष्य - सक्षम हैं हम-जीतेंगे हम

संरक्षक
अतुल कुमार गोयल
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी
प्रेरणा
अजय व्यास
कार्यपालक निदेशक
दिग्दर्शन
नरेश कुमार
महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा
संपादक
अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
संपादक मंडल
आलोक कुमार श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
सत्येंद्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
विशाल कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)

प्रकाशन
यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय
10, बीटीएम सरणी, कोलकाता - 700001
ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in
फोन -033 4455 7384

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं है। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

कुल पृष्ठ – 52, हिंदी पृष्ठ – 44 (80%); क्षेत्रीय भाषा पृष्ठ – 8 (20%)

अनुक्रम

विषय	
माननीय सचिव, राजभाषा का संदेश	2
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का संदेश	3
कार्यपालक निदेशक का संदेश	4
महाप्रबंधक-राजभाषा का संदेश	5
संपादकीय	6
विशिष्ट आलेख	
राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका- डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार	8
सतत विकास के लिए पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता - प्रो.(डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह, कुलपति (सेवानिवृत्त), पटना विश्वविद्यालय	11
कार्यपालक विमर्श	
कोरोना संकट, हमारा नेतृत्व एवं सफलता - अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक, यूको बैंक	15
संकट, नेतृत्व, सफलता और हम-राजेश कुमार तिवारी	17
संकट नेतृत्व एवं सफलता-तिलक भूषण मेहता	18
संकट, नेतृत्व एवं सफलता-ओ पी वर्मा	20
बैंकिंग आलेख	
सीआरआर,एसएलआर और रेपो रेट : भाई और बहन के बीच दिलचस्प बैंकिंग वार्तालाप-चंचल मजूमदार, महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त)	22
विविध	
वक्त की लकीरें-एम एस मोती	24
रिपोतार्ज	
जीवन के रंग बहुरंग- डॉ. रजनी गुप्त	26
तकनीकी लेख	
साइबर सुरक्षा एवं मानवीय निर्भरता- अविनाश शुक्ला	28
भाषा-राजभाषा	
कोरोना काल में बैंक शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण- डॉ. सुधीर कुमार साहु	31
भाषा सौहार्द	
अन्य भाषा-कन्नड़ / संथाली / डोगरी / मणिपुरी	35 - 39
बैंकिंग एवं अन्य विविध गतिविधियां	43-50
साहित्यिकी	51
पाठकीय	52
जनता की सेवा-जनता की भाषा में इस बार तेलुगू	

माननीय सचिव, राजभाषा का संदेश

डॉ. सुमीत जैरथ, भा.प्र.से.
सचिव
DR. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

पत्र सं.: 11034/06/2019-रा.भा.(प्रशिक्षण) दिनांक : 19 जनवरी, 2021

संदेश

अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि यूको बैंक, कोलकाता राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी गृह पत्रिका "अनुगूँज" के अप्रैल-सितंबर, 2020 अंक का प्रकाशन कर रहा है।

2 स्वतंत्रता के बाद, 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुसार सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु और अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करना है।

3 राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम, 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करना, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनाएं और उपाय करें। **राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित होने के कारण आपसे यह अनुरोध है कि एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित कर सभी अधीनस्थ अधिकारियों को मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करें।**

4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।" यह सर्वविदित है कि राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हिंदी का भारत जनभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ रहा है।

5. हिंदी एक वैज्ञानिक, व्यापक, समृद्ध, सरल और जीवंत भाषा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय राजभाषा हिंदी के सरलीकरण और लोकप्रियता बढ़ाने की दिशा में दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है। **अतः मैं आप सभी का आह्वान करता हूं कि अपने प्रेरणादायक नेतृत्व और कुशल मार्गदर्शन से अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करते हुए अपने संवैधानिक और सांविधिक उत्तरदायित्वों का पूर्णतः निर्वाह करें।**

जय भारत जननी ! जय हिंद !

(डॉ. सुमीत जैरथ)

एनडीसीसी-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली 110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267 ई-मेल : secy-ol@nic.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

वित्तीय वर्ष 2020-21 की प्रथम छमाही सफलतापूर्वक समाप्त हो चुकी है। 'सफलतापूर्वक' इसलिए कि कोरोनावायरस महामारी,जिसने संपूर्ण विश्व में प्रत्येक व्यक्ति तथा उनकी जिंदगी के हर पहलू को प्रभावित किया है, जैसी विकट परिस्थिति में भी हमने बेहतर कार्यनिष्पादन किया है। पूरे देश में लगभग 3 माह से अधिक दिनों तक लॉकडाउन रहा । इसके बावजूद इस कठिन समय में हमने कठिन लक्ष्य की प्राप्ति की और पिछली 17 तिमाहियों के बाद मार्च, 2020 तिमाही में पहली बार शुद्ध लाभ अर्जित किया है। मैं सभी यूकोजनों के कठिन परिश्रम की प्रशंसा करता हूँ।

वित्तीय वर्ष 2019-20 की अंतिम तिमाही मार्च, 2020 के परिणामों के अनुसार हमने भारतीय रिजर्व बैंक के पीसीए फ्रेमवर्क के निर्धारित चार मानदंडों को भी पूरा किया है । जून, 2020 तिमाही में भी हमने निवल लाभ में लगातार 27.95% का सुधार दर्ज किया । सुधार एवं वृद्धि की हमारी रफ्तार कम नहीं हुई और सितंबर, 2020 तिमाही में हमने रु. 30 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। मैं, इस तिमाही में कारोबार की गति में तेजी आने से बहुत उत्साहित हूँ। हमसब मिलकर इस आपदा को अवसर में बदलेंगे और व्यवसाय में अपनी बाजार हिस्सेदारी बढ़ाकर लाभप्रदता में सुधार लाने की प्रक्रिया को ऐसे ही बरकरार रखेंगे।

बैंकिंग के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी हम बेहतर कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में नराकास (बैंक), कोलकाता के संयोजक होने के नाते दिनांक 12.08.2020 को **'संकट, नेतृत्व और सफलता'** विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रुप में परम विशिष्ट सेवा पदक, अति विशिष्ट सेवा पदक, वायु सेना पदक से सम्मानित **श्री अरुप राहा, एयर चीफ मार्शल (सेवानिवृत्त), भारतीय वायु सेना** उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त 14 सितंबर, 2020 को प्रथम स्टेप में ही हमारे बैंक की वेबसाइट हिंदी में खुलने का लोकार्पण किया गया जो कि बैंकिंग के इतिहास में एक अनूठा कदम है। इस वर्ष से बैंक ने संसदीय राजभाषा समिति के निहितार्थ को ध्यान में रखकर **"यूको राजा राममोहन राय भाषा सेतु सम्मान"** से **प्रो. शंभुनाथ, निदेशक, भारतीय भाषा परिषद,** कोलकाता को सम्मानित किया।

मुझे विश्वास है कि हमारी अर्जुन-दृष्टि और प्रतिबद्ध प्रयासों तथा निरंतर बेहतर कार्यनिष्पादन से हम वित्तीय वर्ष 2020-21 की बची हुई दो तिमाहियों में भी सफलता की अनवरत यात्रा जारी रखेंगे।

आइए, एक टीम-एक स्वप्न-एक लक्ष्य की भावना को आत्मसात करते हुए बैंक के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।
शुभकामनाओं के साथ,

(अतुल कुमार गोयल)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय यूकोजन,

कोविड 19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के चक्र को जैसे रोक सा दिया है, बड़े-बड़े विकसित देशों से लेकर विकासशील देश इसकी मार से अभी तक उबर नहीं सके हैं। ऐसे में हमारा देश भी इस महामारी के प्रकोप से अछूता नहीं रहा है। हालांकि, पिछले कुछ महीनों से परिस्थितियां कुछ सामान्य होती दिख रहीं हैं, मगर लगभग एक तिमाही से अधिक समय तक चले लॉकडाउन ने निर्माण, विनिर्माण और तमाम आर्थिक गतिविधियों को बहुत हद तक प्रभावित किया है। किंतु हम भारतवासी अपने अथक प्रयास एवं परिश्रम से वापस उस गति को तीव्रता से प्राप्त कर रहे हैं।

पिछली कुछ तिमाहियों के वित्तीय परिणाम ने सभी यूकोजन के बीच हर्षोल्लास का माहौल पैदा कर दिया है। लगातार 17 तिमाहियों में हानि के पश्चात एक बार पुनः हम लाभप्रदता की राह पर निकल चुके हैं। यह सब आप सभी यूकोजनों के अथक प्रयास से संभव हो पाया है। आप सभी के सहयोग तथा निरंतर बेहतर कार्यनिष्पादन से ही आज हमारा बैंक वापस पटरी पर आया है। **लेकिन अभी रुकना नहीं है, अभी तो मीलों तय करना है, यूको बैंक को सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाना है।**

बैंक को संकट से उबारने में आपने जो योगदान दिया है, वह सराहनीय है। बैंकिंग कार्यान्वयन के साथ-साथ राजभाषा में भी हमने बेहतर कार्यनिष्पादन किया है। किंतु हमें और अधिक प्रयास करने हैं ताकि हम अन्य अग्रणी बैंकों की तरह अच्छा कार्य करें और उनकी पंक्ति में आएं। हमारा यह लक्ष्य है कि हम राजभाषा कार्यान्वयन में भी अपना बेहतरीन प्रदर्शन करें और भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'** प्राप्त कर अपने बैंक को गौरान्वित करें। तो आइए, हमारे प्रिय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा दिए गए मंत्र **"एक टीम, एक स्वप्न, एक लक्ष्य"** को आत्मसात करते हुए इस दिशा में आगे बढ़ें और राजभाषा के कार्यान्वयन में पूरा जोर लगा दें, हर संभव प्रयास और प्रयत्न करें, कोई कसर न छोड़ें ताकि भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'** हम जीत सकें।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियों से मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा -

सेनानी करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है,
ये नखत अमां के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है।

शुभकामनाओं सहित,

अजय व्यास

(अजय व्यास)

संदेश

महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा का संदेश

प्रिय साथियो,

कोरोना काल में नव-सामान्य के कुछ नियमों के साथ हमारा बैंक बेहतर कार्यनिष्पादन की ओर अग्रसर है। तिमाही-दर-तिमाही बैंक के वित्तीय परिणाम बेहतर हो रहे हैं और हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह और बेहतर होगा। हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने लक्ष्यों को साधने के लिए **'एक टीम-एक स्वप्न'** मंत्र में नया जोश भरा और अब यह मंत्र है **'एक टीम-एक स्वप्न-एक लक्ष्य'**। इस नए मंत्र से यूकोजन में एक अलग ही ऊर्जा का विस्तार हुआ है। सभी यूकोजनों ने अपनी संपूर्ण प्रतिबद्धता से इस मंत्र की सार्थकता को सिद्ध किया है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस वैश्विक कोरोना महामारी आपदा से उबरने के लिए यूको बैंक के सभी कार्मिकों ने अपना **दो दिन** का वेतन पीएम केयर्स फंड में दान स्वरुप दिया जो लगभग **रु. 7.00** करोड़ था। लॉकडाउन के दौरान सभी कार्य/व्यवसाय बंद थे, जिसके कारण बेरोजगारी का माहौल बढ़ गया था। देश में कई ऐसे लोग हैं जो रोज कमाते हैं तभी उनके घर का चूल्हा जल पाता है। परंतु परिस्थितियां प्रतिकूल होने के कारण भूखमरी जैसी स्थिति पैदा हो गई थी। इस प्रतिकूल परिस्थिति से निपटने के लिए कई समाजसेवी संस्थाओं ने गरीबों में खाद्य सामग्री का वितरण किया। हमारे बैंक ने भी यह बीड़ा उठाया और देश भर में यूको बैंक के विभिन्न कार्यालयों द्वारा गरीबों में **कई बार खाद्य सामग्री** का वितरण किया गया। हमारे कई कार्यालयों ने स्वास्थ्यकर्मियों की सहायता के उद्देश्य से विभिन्न अस्पतालों में **पीपीई किट** का भी वितरण किया।

संस्थाएं मानव से, मानव द्वारा और मानव के लिए होती हैं। उनमें भी संवेदना होती है। कोरोना महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों से जूझने में सहयोग प्रदान करने के लिए हमारे बैंक द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों को **एक माह का वेतन** अग्रिम के रूप में दिया गया। जो स्टाफ सदस्य कोरोना से संक्रमित हुए उन्हें **विशेष छुट्टी** प्रदान की गयी। हमारे कई स्टाफ सदस्य लॉकडाउन के दौरान अपने कार्यस्थल के इतर दूसरी जगह पर फंस गए थे उन्हें उसी स्थान पर **यूको बैंक की नजदीकी शाखा/कार्यालय में प्रतिनियुक्ति** दी गई। मुसीबत के वक्त जरूरतमंदों को सहायता देना हमारी संस्कृति है। राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त जी** की पंक्ति याद आती है –

अहा! वही उदार है, परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

'अनुगूंज' का इस वित्तीय वर्ष का पहला अंक आपके हाथों में है। यह अंक **"संकट, नेतृत्व और सफलता"** विषय पर केंद्रित है जो वर्तमान परिदृश्य को दर्शाता है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इस अंक के लिए हमें **डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** का **संदेश** तथा "**<u>राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका</u>**" विषय पर एक महत्वपूर्ण आलेख प्राप्त हुआ है। इस आलेख में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए 10 'प्र' के फ्रेमवर्क एवं रुपरेखा के आधार पर कार्य करने कि भूमिका को दर्शाया गया है जो हम सब के लिए प्रेरणास्रोत है। इसके अलावा पटना विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. (डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह** का "**<u>सतत विकास के लिए पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता</u>**" विषय पर एक आलेख तथा इसके थीम विषय **संकट, नेतृत्व और सफलता** पर हमारे प्रिय कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** जी का एक बेहतरीन आलेख इस अंक में शामिल किया गया है। हमें गर्व है कि उक्त सुधीजनों ने हमारी पत्रिका के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए हैं। हम माननीय सचिव महोदय, माननीय कुलपति जी एवं हमारे प्रिय कार्यपालक निदेशक महोदय का आभार व्यक्त करते हैं।

हमें अपने बैंक को सुदृढ़ करने में बड़ी भूमिका निभानी है। आइए, हम यह संकल्प लें कि हमारा बैंक सफलता के शिखर पर पहुंचे। इस विषम कोरोना संकट की घड़ी में हम आपके एवं आपके परिवार के बेहतर स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

शुभकामनाओं सहित।

नरेश कुमार

(नरेश कुमार)

सम्पादकीय

प्रिय पाठकगण,

'अनुगूँज' का यह नया अंक आपके हाथों में है। अनुगूँज पत्रिका एक दशक पूर्ण कर दूसरे दशक में प्रवेश कर चुकी है। यह ग्यारहवां साल है। हम अत्यंत हर्ष के साथ बताना चाहते हैं कि इस अंक के लिए हमें **डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** का **संदेश** तथा "**राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका**" विषय पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण आलेख प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही पटना विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. (डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह** का "**सतत विकास के लिए पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता" विषय पर एक आलेख** इस अंक में शामिल किया गया है। पिछले दो अंकों से हमने कुछ नए स्तम्भ जैसे **"कार्यपालक विमर्श"** एवं **"भाषा सौहार्द"** की शुरुआत की थी। **"कार्यपालक विमर्श"** स्तंभ के अंतर्गत इसके थीम विषय **संकट, नेतृत्व और सफलता** पर हमारे प्रिय कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** जी का एक बेहतरीन आलेख हमें प्राप्त हुआ है जिससे इस पत्रिका में चार-चाँद लग गए हैं। **"भाषा सौहार्द"** स्तंभ में हिंदी के साथ-साथ चार क्षेत्रीय भाषाओं को भी शामिल किया गया है, इसने हमारी पत्रिका की लोकप्रियता को एक नई उड़ान दी है। इन स्तंभों को इस अंक में भी हमने जारी रखा है। भाषा सौहार्द के अंतर्गत इस अंक के लिए **मणिपुरी, संथाली, डोगरी एवं कन्नड** भाषा का चयन किया गया है।

अप्रैल-सितंबर, 2020 छमाही के दौरान राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा ऑनलाइन कई कार्यक्रम संपन्न किए गए। दिनांक 21.07.2020 को **"राजभाषा कार्यान्वयन : अपेक्षाएं एवं अनुपालन"** विषय पर एक वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में **श्री जितेंदर मोहन,** अनुसंधान अधिकारी (सेवानिवृत), राजभाषा विभाग, भारत सरकार उपस्थित थे। श्री मोहन ने राजभाषा कार्यान्वयन में राजभाषा विभाग, भारत सरकार की अपेक्षाओं पर प्रकाश डाला । नराकास (बैंक), कोलकाता द्वारा दिनांक 12.08.2020 को **'संकट, नेतृत्व और सफलता'** विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में परम विशिष्ट सेवा पदक, अति विशिष्ट सेवा पदक, वायु सेना पदक से सम्मानित **श्री अरुप राहा, पूर्व एयर चीफ मार्शल, भारतीय वायु सेना** उपस्थित थे। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुसरण में राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा दिनांक 26.08.2020 को **'राजभाषा कार्यान्वयन: नई चुनौतियाँ, नई दिशाएँ'** विषय पर राष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस वेब-संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में **श्री संदीप आर्य,** निदेशक (तकनीकी एवं कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा **श्री निर्मल कुमार दुबे,** सहायक निदेशक एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दिनांक 24.09.2020 को सभी उप अंचल प्रमुखों तथा प्रशिक्षण केन्द्रों के उप प्राचार्यों के लिए **'राजभाषा कार्यान्वयन: कार्यपालकों की भूमिका'** विषय के अंतर्गत राष्ट्रीय वेब हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस वेब-संगोष्ठी में मुख्य संकाय के रूप में **श्री के पी शर्मा,** उप निदेशक, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय- I, नई दिल्ली तथा प्रभारी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार थे। इस वेब-संगोष्ठी में सभी 42 उप अंचल प्रमुखों तथा सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता एवं 07 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों के प्राचार्यों/उप प्राचार्यों के साथ-साथ ने 49 राजभाषा अधिकारियों ने भी सहभागिता की।

'अनुगूँज' का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी जोड़ना है जिससे हमारे स्टाफ सदस्यों में इसकी स्वीकृति बढ़े। हमारा प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से उन्हें हिंदी में कामकाज के साथ मौलिक हिंदी लेखन तथा बैंकिंग संबंधी लेखन में भी प्रोत्साहन मिले।

सभी पाठकों से आग्रह है कि हमारी पत्रिका में शामिल स्तंभों से संबन्धित सामग्री भेजकर राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान दें। हम अपने प्रयास में कितना सफल रहे हैं इसका आकलन आप सभी पाठकगण की प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव से हो सकता है। इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक और ज्ञानवर्धक बनाए रखने के लिए हमें अपने बहूमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएं।

आप और आपके परिवार के सदस्यों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना के साथ,

अमलशेखर करणसेठ

माननीय सचिव राजभाषा का जीवन-वृत

नाम	:	डॉ. सुमीत जैरथ
जन्मतिथि	:	18 अगस्त 1961
भारतीय प्रशासनिक सेवा संवर्ग एवं बैच	:	असम, 1985
वर्तमान तैनाती	:	सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय , भारत सरकार

शैक्षणिक योग्यताएं :

- 'भारतीय और विदेशी स्वामित्व धारी कंपनियों की विपणन कार्य नीति' विषय पर प्रबंधन अध्ययन संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय से पी एच डी की उपाधि
- बरमिंघम विश्वविद्यालय (एडगाबास्टन), इंग्लैण्ड से पब्लिक सर्विस विषय पर एम.बी.ए (उत्कृष्ट ग्रेड)
- प्रबंधन,अध्ययन संकाय (एफ.एम.एस) दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.बी.ए (विपणन एवं वित्त)/पूर्ण कालीन
- दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए (अर्थशास्त्र)
- सेंट स्टीफन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए (निष्णात अर्थशास्त्र)

भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्य अनुभव :

- केंद्र और राज्य सरकार के इकोनॉमिक और इंफ्रास्ट्रक्चर मंत्रालयों में कार्य करने का 34 वर्ष का व्यापक अनुभव, स्टील, पॉवर, इकोनॉमिक अफेयर (वित्त), भारी उद्योग और लोक उद्यम कार्य व्यापार (विदेश व्यापार) में अपर महानिदेशक के पद पर कार्य करने का चार वर्ष का अनुभव;
- रशियन फेडरेशन मॉस्को में भारतीय दूतावास के भारतीय चाय बोर्ड में काउंसलर (कॉमर्शियल और निदेशक) के पद पर कार्य करने का तीन वर्ष का अनुभव
- विदेश मंत्रायल में मुख्य वित्तीय अधिकारी (सी.एफ.ओ)- वित्तीय सलाहकार के पद पर तीन वर्ष एवं छः महीने का अनुभव
- मंत्रिमंडल सचिवालय में विशेष सचिव के पद पर कार्य करने का एक वर्ष का अनुभव

व्यक्तित्व की विशिष्ट क्षमताएं :

- सौहार्दपूर्ण / उदार व्यक्तित्व
- मैत्रीपूर्ण स्वभाव
- दायित्व के प्रति निष्ठायुक्त समर्पण
- कुशाग्रता एवं दक्षता (अर्थशास्त्र एवं प्रबंधन के क्षेत्र में)
- देश के उन्नत विकास में संलग्न, प्रमुख आर्थिक एवं बुनियादी ढांचे से
- सम्बध मंत्रालयों में महत्वपूर्ण भूमिकाओं में कार्य का पर्याप्त अनुभव
- विभिन्न संस्थाओं में तीस वर्ष से अधिक की अवधि का नेतृत्व का
- अनुभव जहाँ रचनात्मक मार्गदर्शन एवं सामूहिक कार्यों के माध्यम से उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की
- प्रधानता (ऊर्जायुक्त प्रेरणा के साथ मार्गदर्शन की आकांक्षा)
- प्रबल आत्मविश्वास
- ईमानदार एवं सत्यनिष्ठा
- 'आँखों में सपने' और 'चाल में स्फूर्ति' प्रफुल्लित/प्रचंड ऊर्जायुक्त एवं
- संवेदना से परिपूर्ण
- आत्म अवलोकन तथा आत्मसंशोधन द्वारा निरंतर निजी क्षमता को
- कुशाग्र बनाए रखने के प्रति कटिबद्ध; स्टीफन कन्वे के शब्दों में **'सीखते रहने वाला व्यक्ति'** एवं पीटर सेंगे के शब्दों में **'सीखने वाली संस्था'** बने रहने के लिए, अभियान सम उत्साह के साथ, आजीवन सीखने के प्रति कटिबद्ध

अभिरुचियाँ -:

- अध्ययन
- शिक्षण
- भ्रमण
- संगीत श्रवण
- टेलीविज़न पर समाचार चैनलों को देखना
- एक ज़िम्मेदार एवं समर्पित वैश्विक नागरिक होने के नाते विश्व भर में
- घट रही अद्यतन घटनाओं से जुड़े रहने के लिए अन्तर्जाल/इंटरनेट पर नई जानकारी खोजना

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

डॉ. सुमीत जैरथ,
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय , भारत सरकार

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। **वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों /मंत्रालयों /उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए।** तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरुप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधानसभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधानसभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रुप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रुप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग ढृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों /मंत्रालयों /उपक्रमों /बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान'(Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रुपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रुप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार

करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

<u>प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)</u>

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वियन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल **'कंठस्थ'** के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

<u>प्रशिक्षण (Training)</u>

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्रीजी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित हो कर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान- केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

<u>प्रयोग (Usage)</u>

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it)' हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

<u>प्रचार (Advocacy)</u>

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है।वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई।संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था।

उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

<u>प्रसार (Transmission)</u>

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह-पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

<u>प्रबंधन (Administration and Management)</u>

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, के नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रुप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

<u>प्रयास (Efforts)</u>

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रुप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है।इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा से संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रुप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन **दस 'प्र'** को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** के सपने को साकार करने में सफल होंगे। अ

प्रो.(डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह

कुलपति (सेवानिवृत्त)
पटना विश्वविद्यालय

यूको बैंक जी.डी. बिड़ला व्याख्यानमाला के अंतर्गत पटना अंचल कार्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में प्रस्तुत व्याख्यान।

विशिष्ट आलेख

सतत विकास के लिए पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता

परिचय (introduction):

सतत विकास भारतीय समाज की सनातन विरासत है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' तथा "जियो और जीने दो (Live and Let him live)" जैसे दर्शन और कर्म सतत विकास के ही मौलिक अवधारणाओं पर आधारित है। महात्मा गांधी ने उचित ही कहा है कि पृथ्वी पर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त संसाधन हैं लेकिन हमारे लोभ के लिए पर्याप्त नहीं हैं (There are enough resources for our needs but not enough to meet our greed)। उद्भव और विकास प्रकृति का नैसर्गिक अनुशासन, नियम एवं अनिवार्यता है। इसी आधार पर डार्विन द्वारा जीवों के उद्भव (Evolution of species) का सिद्धांत भी दिया गया है। विकास के ये सभी प्रारंभिक अवधारणाएँ स्वतः पर्यावरणीय संतुलन के नियमों पर आधारित है। आपके आसपास की वे सभी चीजें (Things) जिसे आप देखते हैं, समझते हैं और उपयोग में लाते हैं, वे स्थानीय पर्यावरण का निर्माण करते हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी स्वयं एक वृहद पर्यावरण / पर्यावरणीय तंत्र / पारिस्थैतिक तंत्र का निर्माण करता है। इस तंत्र के साथ मानव द्वारा क्रूरतापूर्ण व्यवहार ही पर्यावरणीय संतुलन को विनिष्ट कर रहा है। पर्यावरणीय संतुलन के लगातार विनिष्ट होने से बचाव हेतु सतत विकास के कार्यों को अग्रसारित करने की जरूरत है।

पर्यावरणीय संतुलन के घटक (Components of Environmental Balance):

पर्यावरण का निर्माण अजैविक (A biotic) एवं जैविक (Biotic) घटकों की अवस्थिति और उसके बीच अन्तः क्रिया और अंतर-क्रिया और अंतिकरण (intra-action, interaction and integration) की सतत प्रक्रिया का परिणाम है। अजैविक घटकों का निर्माण भूमि, जल और वायु (Land,Water and Air) तथा जैविक घटक का निर्माण, जीवमंडल (Biosphere) करता है। दूरस्थ घटकों में ब्रह्मांडीय पिंडो, मुख्यतः सूर्य और चाँद भी पर्यावरणीय निर्माण में ऊर्जा और उल्कापिंडों के द्वारा अपना योगदान देते हैं। घटकों के कार्यिक भूमिका को सरल करते हुए कहा जा सकता है कि प्रकृति के अजैविक घटक पदार्थ और ऊर्जा प्रदान करते हैं जिसके साथ जैविक घटक सतत अंतरक्रिया (Interaction) के द्वारा एक संतुलित पर्यावरण का निर्माण करते हैं। संपूर्ण पृथ्वी तंत्र एक वृहद पर्यावरण है लेकिन स्थलीय विशेषता, जलवायु, नदी, झील, सागर, वन, मरुस्थल, हिमानी तथा हिमाच्छादन जैसे कारक वृहद से लघु स्तरीय पर्यावरण का निर्माण करते हैं। पर्यावरण के घटक कई महत्वपूर्ण क्रियाएँ करते हैं, इनमें खाद्य श्रृंखला, जल चक्र, ऑक्सीजन तथा कार्बन चक्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उपर्युक्त सभी घटक प्राकृतिक नियमों के अनुरूप अपना अस्तित्व बनाकर कार्यिक भूमिका में सक्रिय रहते हैं। यही सक्रियता पर्यावरणीय संतुलन को कायम रखता है।

पर्यावरणीय संतुलन का ह्रास (Depletion of Environment Balance): पर्यावरणीय

संतुलन के अंतर्गत सभी घटनाओं की अवस्थिति, कार्य और उत्पादकता (परिणाम) स्वतः निर्धारित तथा प्रकृति नियंत्रित अनादि काल से आ रहे विधान हैं। पर्यावरण में भी परिवर्तन होते हैं लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत ही धीमी होती है और उस परिवर्तन का अनुभव लंबे अरसे बाद होता है।

मनुष्य द्वारा प्रकृति के इसी निर्धारित प्रक्रिया में दखल देने से पर्यावरणीय ह्रास या निम्नीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है। वर्तमान समय में निम्नीकरण का स्तर इतना खतरनाक स्थिति में पहुँच चुका है कि मनुष्य जाति के अस्तित्व पर भी संकट की छाया अनुभव की जाने लगी है।

पर्यावरणीय संतुलन के ह्रास के प्रमुख कारणों की समीक्षा से स्पष्ट है कि मनुष्य ही इसके केंद्र में है। यह स्थिति अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसी है अथवा उस मूर्ख की भांति है जो उसी डाल को काट रहा है जिस पर वह बैठा है। मानव शास्त्री गोल्ड्सबाय (Goldsby)के अनुसार जिस काल में मनुष्य चौपाया से दोपाया जानवर (Ramapithecus stage to Evolution) बना उसी समय से उसे अतिरिक्त अंग (Organ) के रूप में दो हाथ प्राप्त हो गए और इसका उपयोग अतिरिक्त लाभ हेतु प्रकृति के दोहन के रूप में प्रारंभ हो गया। उन्होंने यह भी लिखा है कि मेधावी मानव (Homo-sapiens) को तुलनात्मक दृष्टि से अतिरिक्त ब्रेन आकार (Additional Brain Volume)प्राप्त हुआ जिसके कारण अन्य जीवों की तुलना में वह अधिक चतुर और अच्छे-बुरे की पहचान करने लगा। उसके द्वारा आग पर नियंत्रण पा लिया गया। झुंडों में रहने लगा तथा अर्थपूर्ण आवाज (Meaningful Sounds) निकालने लगे। इसी के साथ मानवीय समाज और संस्कृति का उद्भव प्रारंभ हो गया और पर्यावरण पर मानवीय प्रहार तेज होने लगे।

मानवीय जनसंख्या की वृद्धि भी पर्यावरण ह्रास का एक बड़ा कारण है। 1650 ई. में विश्व की जनसंख्या मात्र 50 करोड़ थी। 1950 ई. में बढ़कर 250 करोड़,1987 ई. में 500 करोड़ तथा 2011 ई. में 700 करोड़ हो गई। इस वृद्धि का मूल कारण मृत्यु दर पर भारी नियंत्रण, जन्मदर पर सीमित नियंत्रण, जीवन/आपदा से होने वाली मृत्यु में भारी कमी आना है। शेष जीवों की जनसंख्या वृद्धि प्रकृति नियंत्रित है, लेकिन मानवीय जनसंख्या वृद्धि मानवीय प्रबंधन पर निर्भर करता है। यही अंतर मानव की बढ़त स्थापित करता है और वह अपने नैसर्गिक अधिकार से कई गुणा अधिक प्राकृतिक अर्थात पर्यावरणीय संसाधनों का दोहन कर उसे खोखला बनाते जा रहा है। वनों की भारी कटाई, महानगरों का विस्तार, ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन में भारी वृद्धि, ओजोन स्तर का पतन, भूमंडलीय ताप (Global Warming), समुद्री जल स्तर में वृद्धि, पृथ्वी तल पर अपक्षय न होने वाली कचरों का ढेर (Mounds of non-degradable waste products) जीवाश्म ऊर्जा का प्रयोग, जल, वायु, ध्वनि तथा मृदा प्रदूषण, वनीय आग, हिमानियों का पिघलना,प्राकृतिक आपदाओं में अप्रत्याशित वृद्धि जैसे अनेक कारक हैं जो पर्यावरण के वर्तमान ह्रास की स्थिति के कारण हैं। इतना स्पष्ट है कि इन सभी कारणों में मानव प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कहीं ना कहीं इन कारणों का कारण (Cause of causes) है।

पर्यावरणीय ह्रास का परिणाम

(Consequences of Environment Depletion) :

पर्यावरणीय ह्रास का परिणाम धीरे-धीरे भयावह बनता जा रहा है। प्रारंभ में इसका प्रभाव विश्व तापमान में वृद्धि की प्रवृति, ओज़ोन स्तर में ह्रास और मुख्यतः महानगरों में प्रदूषण के रूप में अनुभव किया गया लेकिन 1970 ई. के इसके बाद व्यापक प्रतिकूल प्रभाव दिखाई देने लगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा 2016 में नगरीय प्रदूषण की जो रिपोर्ट जारी की गई है उसमें विश्व के प्रथम 10 सर्वाधिक प्रदूषित (पी.एम.2.5 के आधार पर) नगर भारतीय नगर है। ये क्रमानुसार कानपुर, फरीदाबाद, वाराणसी, गया, पटना, दिल्ली, लखनऊ, आगरा, मुजफ्फरपुर तथा श्रीनगर हैं। प्रदूषण का प्रभाव लघु प्रदेश से लेकर भूमंडलीय स्तर तक अनुभव किया जाने लगा है। 1970 से 50 वर्षों के बाद 2020 आते-आते पर्यावरणीय ह्रास के कारण मानवीय सभ्यता और संस्कृति पर भी संकट उत्पन्न हो गया है। यदि कार्बन उत्सर्जन की यही प्रवृति कायम रही तो 2100 ई. आते-आते विश्व के तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है, जिससे समुद्री जलस्तर में भी 1-3 मीटर तक की वृद्धि हो सकती है। यह इतना भयावह होगा कि लगभग 2500 द्वीप जलमग्न हो जाएँगे। मालदीव, मार्शल द्वीप समूह तथा नौरू (Nauru)द्वीप समूह जैसे देशों का नामोनिशान या अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। बांग्लादेश की लगभग 1.5 से 2 करोड़ की जनसंख्या तटीय भागों को छोड़कर ऊपरी प्रदेश में जाने के लिए विवश हो जाएगी। अफ्रीका महाद्वीप का कोई भी शिखर हिमाच्छादित नहीं होगा। हिमालय की लगभग 90 से 100 मीटर ऊपर चली जाएगी। आर्कटिक सागर के पिघलने से एक नया

समुद्री मार्ग उत्पन्न हो जाएगा । अंटार्कटिका महाद्वीप केकई द्वीप मानवीय अधिवास के लिए खुल जाएंगे। मरुस्थलों का विस्तारीकरण होगा तथा अनेक नए संक्रमण फैलाने वाली बीमारियाँ भी उत्पन्न होगी।

समुद्री जलस्तर में वृद्धि से समुद्री जैविक संरचना पर भी प्रभाव पड़ेगा। उष्ण समुद्र के तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीव कोरल पोलिप्स समाप्त हो जाएंगे। प्लेंकटन जैसे सूक्ष्म वनस्पति का भी विनाश होगा । पेंगुइन और समुद्री गिलहरी जैसे समुद्री जीव तेजी से विनिष्ट होने लगेंगे। पुनः समुद्री जल के गर्म होने से चक्रवातीय बवंडर की बारंबारता और आकार में वृद्धि होगी। इससे तटीय प्रदेशों में विनाशकारी प्रकोप की बारंबारता में वृद्धि होगी।

अभी भी औसतन प्रति वर्ष 10-12 हजार वर्ग किलोमीटर वनों की कटाई हो रही है। सिर्फ ब्राजील में ही आधे से अधिक वनों की कटाई हो रही है। वर्तमान में विश्व में 16% क्षेत्रफल ही वनाच्छादित है जबकि इसे 33% होना चाहिए।

हैती जैसे द्वीप वन विहीन (Tree Less Country) हो चुके हैं। वनों की कमी से निम्नांकित पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं:-

वनस्पति की विविधता में ह्रास,कई वनस्पति विरल हो चुकी है, जैसे यू. एस. ए. (USA) में प्रेयरी घास के मैदान लगभग समाप्त हो चुके हैं।

जैव विविधता में भारी ह्रास हुआ है। हाथी जैसे विशालकाय और बाघ जैसे खूंखार जानवर भी संकटग्रस्त घोषित किए जा चुके हैं। एक अध्ययन के अनुसार औसतन प्रतिदिन वनस्पति और जीव-जंतुओं की प्रजाति मिलकर 50-60 प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं या विलुप्त होने की कगार पर पहुंच जाती हैं।

वनों की कमी से वर्षा में कमी और तापमान में वृद्धि की समस्या उत्पन्न हुई है। बंजर भूमि के आकार में वृद्धि हो रही है। वन आधारित उत्पाद में कमी आई है। जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक उत्पाद की निर्भरता में वृद्धि और प्लास्टिक जैसे विनिष्ट न होने वाले तथा पर्यावरण में प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करने वाले पदार्थों के उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि की प्राकृतिक विकसित हुई है।

वनों के ह्रास से जल चक्र, ऑक्सीजन चक्र और कार्बन चक्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगा है। वर्षा की अनिश्चिता, कार्बन की मात्रा में वृद्धि, ऑक्सीजन की मात्रा में तुलनात्मक वृद्धि और सूक्ष्म जीवों से लेकर वृहद जीवों तक उपल होने वाले प्राथमिक उत्पादकता में कमी आना इसका प्रमाण है।

अतः स्पष्ट है कि तापमान में वृद्धि,समुद्री जलस्तर में वृद्धि और वनों का ह्रास तीन ऐसे पर्यावरणीय ह्रास के कारण एवं परिणाम (Cause and effect) दोनों हैं जिससे पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता के अनुरूप नियंत्रित नहीं किया गया तो विकास के चौराहे पर खड़ा मानव भटकाव के अंधेरे में खो जाएगा और पृथ्वी तंत्र का जैविक अस्तित्व और विविधता भविष्य के गर्त में समा जाएगा।

सतत विकास की संकल्पना और पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता:

ऊपर के तथ्यों से स्पष्ट है कि पृथ्वी का तंत्र पर्यावरण सिर्फ असंतुलित हो गया है वरन असंतुलन के दौर से गुजर रहा है। इसको बाहर निकलने का प्रयास 20वीं सदी के दूसरे दशक में ही प्रारंभ हो चुका था, जब ग्रिफिथ टेलर ने रुको और जाओ नियतिवाद (Stop-and-Go Determinism) का सिद्धांत 1919 ई. में दिया था। इसके अनुसार विकास के किसी भी कार्य का प्रारंभ करने से पूर्व रुक कर अवश्य देखें कि नियति अर्थात पर्यावरण क्या कहता है। कोई भी विकास पर्यावरण की आधारभूत अनिवार्यता को त्यागकर करना कठिन होगा। लेकिन 20वीं शताब्दी के मध्य में औद्योगिकिकरण और परिवहन सुविधाओं के विश्वव्यापी विकास की दौड़ में ग्रिफिथ टेलर के दर्शन को समझने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई। पुनः1972 ई. में क्लब ऑफ रोम (Club of Rome) द्वारा 'Limits to Growth' नामक पुस्तक प्रकाशित की गई। यह पुस्तक पिछले 70वर्षों (1900-1970) में जनसंख्या वृद्धि, तकनीकी विकास, खाद्यान्न उपलता और संसाधनों की आपूर्ति जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आधारित था। विश्व के अधिकतर देशों से आंकड़ा संग्रहित कर मेसाच्यूटेसस इंस्टीव्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT)की मदद से Software Based Model तैयार किया गया और मानव समुदाय को चेतावनी दी गई कि यदि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण, तकनीकी का रचनात्मक उपयोग और संसाधनों के उपयोग में आवश्यकताओं की प्राथमिकताओं को निर्धारित कर नियंत्रित उपयोग नहीं किया गया तो मानव समुदाय के लिए पर्यावरणीय असंतुलन जैसी समस्याएं गंभीर चुनौती उत्पन्न कर सकती हैं लेकिन इन चेतावनियों को भी गंभीरता से नहीं लिया गया। यद्यपि 1972 ई. में स्टॉकहोम शिखर सम्मेलन, 1992 ई. में रियो-डी-जेनेरियों का घोषणा पत्र, 1997 ई. में क्योटो घोषणा पत्र और 2016 ई. में पेरिस शिखर सम्मेलन जैसे महासम्मेलन, पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु

भूमंडलीय सहमति के लिए आयोजित की गई लेकिन उनके प्रभाव घोषणा पत्र के अनुकूल नहीं हैं और सही अर्थों में समस्याएं त्वरित ही होती जा रही हैं।

वस्तुतः अंतरराष्ट्रीय सहमति के पूर्व पर्यावरणीय राजनीति सभी देशों के लिए और मुख्यतः G-7 और G-20 के देशों के लिए नियति हो गया है। वे विकास और पर्यावरण की भू-राजनीति से बाहर निकलकर संतुलित विकास अर्थात सतत विकास की दिशा में कार्य नहीं कर रहे हैं। सतत विकास की अवधारणा का आधार ग्रिफिथ टेलर जैसे चिंतक और लिमिट्स आफ ग्रोथ (Limits of Growth) जैसे प्रकाशन से आता है। पर्यावरणीय विशेषज्ञों द्वारा 1980 के दशक में सतत विकास की अवधारणा को मजबूत करने पर बल दिया गया। 2002 में जोहान्सबर्ग घोषणापत्र के अंतर्गत विश्व के अधिकतर देशों ने विकास की नई नीति बनाने के क्रम में सतत विकास मॉडल अपनाने के घोषणा पत्र पर सहमति व्यक्त की है किंतु तकनीकी और संसाधन के विषयों पर वे विकसित और विकासशील समूह में विभाजित थे।

विकास अनिवार्य है। मानव प्रजाति की विशिष्ट और मेधावी मानसिक क्षमता पर पूर्ण नियंत्रण लगाकर सिर्फ अव्यवस्था ही उत्पन्न की जा सकती है। अतः आवश्यक है कि पूर्ण नियंत्रण के बदले उनके मेधावी क्षमता का उपयोग सतत विकास के लिए किया जाए। सतत विकास निम्नलिखित तीन अवधारणा पर आधारित हैः-

सतत विकास मानवीय खुशहाली का वातावरण बना सकता है, लेकिन आसान नहीं है इसके लिए उपभोक्तावादी मानसिकता का त्याग अति आवश्यक है। इस प्रकार के वातावरण को बनाने के लिए बुद्धिजीवियों और मुख्यतः विश्वविद्यालयों को आगे आना होगा। विश्वविद्यालयों के छात्रों में भी सतत विकास के मॉडल के प्रति जागरूकता होनी चाहिए। वे इसका संदेश गाँव और घर-घर तक पहुँचा सकते हैं। राज्य सरकार, बुद्धिजीवी, शोध संस्थाएं और विश्वविद्यालय मिलकर युद्ध स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चला सकते हैं।

किसी भी विकास कार्य के प्रारंभ करने के पूर्व Environmental Assessment and Appraisal तथा Environmental Auditing पर आधारित होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में किसी भी योजना से होने वाले लाभ या हानि के बीच का अंकेक्षण आवश्यक है। यदि हानि विनाशकारी है तो ऐसी योजनाओं को त्यागना ही श्रेयस्कर है। लाभ हानि का अंकेक्षण लघुकालीन और दीर्घकालीन दोनों ही परिपेक्ष में आवश्यक है।

प्रकृति की विरासत वह धरोहर है जिस पर सिर्फ वर्तमान मानव का ही नहीं वरन भविष्य में भी आने वाली पीढ़ियों का भी बराबर का अधिकार है।

अतः किसी भी विकास योजना को अंतिम रूप देने से पूर्व यह समझना अति-आवश्यक है कि आने वाले दिनों की संभावित जनसंख्या आकार की आवश्यकताओं के लिए भी हम संसाधनों का संरक्षण कर रहे हैं या नहीं, अर्थात विकास योजना ऐसी बने जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता की पूर्ति करे तथा भविष्य की पीढ़ी के लिए भी संरक्षण की गारंटी दे।

उपर्युक्त अवधारणाओं पर आधारित विकास मॉडल एकमात्र विकल्प है जो वर्तमान दुनिया को पर्यावरणीय संकट से बाहर निकाल सकता है और पृथ्वी तंत्र पर प्रकृति नियंत्रित का नैसर्गिक अनिवार्य नियंत्रण स्थापित कर सकता है।

स्व.जी. डी. बिड़ला जी भारतीय उपमहाद्वीप में औद्योगिक क्रांति के जनक थे। नवीन विकास के साथ-साथ धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रकृति के प्रति उनका प्रेम जगजाहिर था। भारत में शायद ही कोई ऐसा महानगर हो जहाँ बिड़ला मंदिर और धर्मशाला के साथ हरे-भरे प्रांगण का निर्माण न किया गया हो। जी. डी.बिड़ला द्वारा स्थापित यूको बैंक के कर्मियों का यह दायित्व है कि वे सतत विकास आधारित विकास प्रोजेक्ट को ऋण देने में प्राथमिकता दें तथा वानिकी और जैविक संरक्षण जैसे कार्यों को सामाजिक दायित्व आवंटन (Social Responsibilities Allocation) के अंतर्गत खर्च करने में प्राथमिकता दें।

मुझे बड़ी खुशी है कि इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मेरे विद्यार्थी और कर्मचारीगण मौजूद हैं जो इस बात का संकेत देता है कि पर्यावरणीय संकट की घुटन हर कोई महसूस कर रहा है और इससे बाहर निकलने से संबंधित विचारों को जानना चाहते हैं और लोगों को बताना भी चाहते हैं। आप सभी को मैं धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूँ कि आप इस मुहिम को सफल बनाएं और सतत विकास को ही खुशहाली का एकमात्र मार्ग समझें।

कार्यपालक विमर्श

कोरोना संकट, हमारा नेतृत्व एवं सफलता

अजय व्यास

कार्यपालक निदेशक

आपदा के समय कर्मचारियों का मनोबल टूटना और घबराहट एक सामान्य सी बात है। समय-समय पर टाउन हॉल मीटिंग एवं वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से बैठक कर कर्मचारियों में नया जोश भरा गया एवं विश्वास दिलाया गया कि संस्था मूलभूत तौर पर सशक्त है एवं बैंक पूर्वी भारत का सबसे अच्छा बैंक बनने की ओर अग्रसर है।

संकट जो सर्वव्यापी चुनौतियों से भरा हो, किसी भी संस्थान के परिचालन को तितर-बितर कर देने का माद्दा रखता है परंतु एक कुशल नेतृत्व कर्मचारियों को प्रोत्साहित, कार्य को व्यवस्थित, प्रबंधन की बहाली और तानाबाना बुनकर संस्थान को संकट से निकाल सफलता की ओर अग्रसर कराता है।

आपके लिए यूको बैंक से अच्छा उदाहरण कोई और नहीं हो सकता। बैंक वर्ष-दर-वर्ष संकट के घोर अंधकार में था। लगातार 17 तिमाही से बैंक को घाटा हो रहा था। कर्मचारियों का मनोबल निम्न स्तर पर था और साथ ही सरकार भी चिंतित थी। जमाकर्ताओं की पूंजी को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक को त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई में चिह्नित कर दिया। इन दिनों बाजार, सरकार एवं निवेशकर्ताओं का विश्वास भी डगमगा गया था। बैंक प्रबंधन पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी कि कैसे इस संकट से बैंक को उबारा जाए। बैंक प्रबंधन इस संकट से सफलतापूर्वक कैसे बाहर आया यह सर्वविदित है। बैंक पिछली तीन तिमाही से शुद्ध लाभ में है। यह यात्रा अत्यंत दुष्कर और चुनौतियों से भरपूर थी। एक तरफ कर्मचारियों का मनोबल बनाए रखना था तो दूसरी ओर नियामक को यह विश्वास दिलाना था कि बैंक सही दिशा की तरफ अग्रसर हो रहा है। आइए, यह देखें कि कैसे घोर संकट की घड़ी में सही एवं सटीक नेतृत्व की सहायता से हम बैंक का कायाकल्प अर्थात सफलता प्राप्त करने में कामयाब हुए।

1. एकीकृत भावना, दिशा और एजेंडा प्रदान करना: प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने आते ही नारा दिया **"वन टीम-वन ड्रीम"**। परिचालन लाभ, ग्राहक अधिग्रहण, डिजिटल बैंकिंग, ऋण की निगरानी, वसूली, जोखिम प्रबंधन, ऋण देने आदि के संबंध में नए सिद्धांत, दिशा एवं मानदंड तय किए गए। नए उत्पाद, मौजूदा प्रोडक्ट्स में बदलाव, प्रक्रिया में बदलाव, निगरानी, मार्केटिंग, आईटी प्लेटफार्म ने सभी लोगों को एक माला में पिरो दिया। आज सभी के पास काम का एजेंडा है और उपलब्धि का मानदंड भी।

2.घबराहट दूर करना : आपदा के समय कर्मचारियों का मनोबल टूटना और घबराहट एक सामान्य सी बात है। समय-समय पर टाउन हॉल मीटिंग एवं वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से बैठक कर कर्मचारियों में नया जोश भरा गया एवं विश्वास दिलाया गया कि संस्था मूलभूत तौर पर सशक्त है एवं बैंक पूर्वी भारत का सबसे अच्छा बैंक बनने की ओर अग्रसर है। अधिकारियों से कहा गया कि वे निर्भीक हो कर निर्णय लें और सभी व्यावसायिक निर्णयों का प्रधान कार्यालय हमेशा सम्मान करेगा, यह भरोसा उत्पन्न किया गया। जैसे-जैसे स्थिति सुधरती गई, डर जाता रहा और घबराहट का स्थान विश्वास ने ले लिया।

3.साझा जिम्मेदारी की भावना को प्रेरित करना : "जिम्मेदारी" और "जवाबदेह ठहराए जाने" जैसी अवधारणाएं कर्मचारियों द्वारा सामान्यतः नकारात्मक रूप से देखी जाती हैं। लोग कई कारणों से अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए आंतरिक रूप से प्रेरित होते हैं पर इसमें कोई भी अनिवार्यता नहीं होती है -

कम से कम प्रभावी रूप से या निरंतर रूप से। एक टॉप-डाउन दृष्टिकोण कर्मचारियों को फिर से एक बच्चे की तरह महसूस कराता है- यह विश्वास और स्वतंत्रता की बुनियाद कमजोर करता है। यह लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपना रास्ता खोजने के लिए प्रेरित नहीं करता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों के समक्ष स्पष्ट रूप से परिभाषित उम्मीदों/लक्ष्य की आवश्यकता होती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए लक्ष्यों का निर्धारण आपसी समझ एवं संवाद के माध्यम से किया गया जिससे सभी कर्मचारियों को जिम्मेदारी का ज्ञान हुआ। इसके साथ ही समावेशी विकास को मूर्तरूप दिया गया। बैंक में साझा जिम्मेदारियों का संचार हुआ जो संगठन के मिशन, मूल्यों और उद्देश्य - जैसे कि ग्राहक केंद्रितता या गुणवत्ता का समर्थन करती है।

4.भावनात्मक रूप से बंधन: कर्मचारियों को अपने उच्चतम स्तर पर प्रदर्शन करने और संगठन की सामूहिक सफलता हेतु समर्पित होने के लिए अपने काम से प्यार करना होगा। वेतन बढ़ाने, बोनस की पेशकश इत्यादि साधनों में निवेश करने की तुलना में कुछ गहरा और लंबे समय तक चलने वाले जुड़ाव की आवश्यकता है। ये जुड़ाव ही भावनात्मक संबंध हैं जो लोगों को उत्प्रेरित करते हैं। स्टाफ जब देखते हैं कि उनका काम संगठनात्मक परिणामों को सकारात्मक रूप से कैसे प्रभावित कर रहा है और यह कैसे उनके प्रबंधकों, सहयोगियों और दुनिया के लिए मायने रखता है तो वे स्वतः ही संगठन से जुड़ जाते हैं। भावनात्मक संबंध, संतुष्टि और बौद्धिक संरेखण की एक प्रेरक भावना है जो केवल योग्य उद्देश्य की सराहना और महसूस करने से आ सकती है। उच्च प्रबंधन ने सभी यूकोआइट साथियों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के कार्य का बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयास किया। उच्च प्रबंधन तंत्र अब सुलभता से उपलब्ध है और संवाद बहुत ही अच्छे माहौल में होते हैं।

5.चुनौतियों के लिए चिंता का प्रदर्शन करना : इस पथ पर चुनौतियां कम नहीं थीं। एक ओर जहां RWA (Risk Weighted Assets रिस्क वेटेड असेट) का प्रबंधन करना था तो दूसरी और पूंजी जुटाना। बाजार में नकारात्मक भाव शाखाओं को परेशान किए हुआ था वहीं दूसरी ओर गैर निष्पादित आस्तियों का विकराल रूप सर दर्द बना हुआ था। यह सब परेशानी एवं चिंता का विषय था। ये समय सभी को साथ ले कर चलने का था। उच्च तंत्र हमेशा जमीनी चिंता और चुनौतियों से रुबरू रहा एवं सभी को सहयोग करता रहा जिसके फलस्वरुप शाखा स्तर के कर्मचारी प्रधान कार्यालय को अपना मित्र, मार्गदर्शक, दार्शनिक और समझने लगे। जब किसी संस्थान के स्टाफ को यह भरोसा हो जाए कि प्रबंधन उसका मित्र है, कठिन से कठिन कार्य सरल हो जाता है। और, यही अपने बैंक के टर्नअराउण्ड की सच्चाई है।

6.समीक्षा एवं कार्य का मूल्यांकन: शाखा प्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक के कार्य की सटीक समीक्षा एवं कार्य की प्रगति का लक्ष्य के साथ मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य का पेशेवर तरीके से अनुपालन एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस व्यवस्था ने कार्य को एक निश्चित दिशा एवं निरंतर प्रगति प्रदान की जो संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अत्यंत जरूरी है। बैंक ने इस दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए और सिस्टम आधारित पेशेवर दृष्टिकोण अपनाया जिसका परिणाम आज हमारे समक्ष है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संकट, नेतृत्व एवं सफलता का बहुत गहरा रिश्ता है। संकट में ही नेतृत्व निखरता है, नई पीढ़ी के नेतृत्व का सृजन होता है। और अगर नेतृत्व पारदर्शी, ईमानदार, कर्मठ, पेशेवर एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण रखता है तो किसी भी आपदा में सफलता सुनिश्चित है। हमारे इस महान बैंक के संघर्षों एवं सफलता के संदर्भ में राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की निम्नलिखित पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं:

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है।
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते।
विघ्नों को गले लगाते हैं,
कांटों में राह बनाते हैं।

कार्यपालक विमर्श

संकट, नेतृत्व, सफलता और हम

राजेश कुमार तिवारी

उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक, अजमेर

संकट प्रबंधन के दौरान कुशल **नेतृत्व** क्षमता का परिचय देना सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक कुशल व सजग लीडर वही है जो कि विषम परिस्थियों और मुश्किल हालातों में भी अपनी नेतृत्व क्षमता द्वारा लोगों का मनोबल बढ़ाए।

संकट एक हिंदी शब्द है जिसका तात्पर्य है मुसीबत। संकट एक कष्टकारी स्थिति है जिसकी कभी अपेक्षा नहीं की जाती। **संकट प्रबंधन** वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक संगठन किसी भी अप्रत्याशित घटना से निपटता है, जिससे उस संगठन या उसके हितधारकों को नुकसान पहुंचने का खतरा हो। संकट आ जाने पर विपरीत परिस्थितियों में भी उससे निपटना शामिल है। यह किसी गंभीर परिस्थिति को पहचानने, आकलन करने, समझने और जूझने के लिए जरूरी कौशल और तकनीक सहित **प्रबंधन** के व्यापक संदर्भ के तहत एक अनुशासन है। खास तौर पर इसके पहली बार घटने के क्षण से लेकर संभलने की प्रक्रिया शुरू होने तक इसमें सम्मिलित है।

एलन कीथ गेनेंटेक के अनुसार "नेतृत्व वह है जो अंततः लोगों के लिए एक ऐसा मार्ग बना सके जिसमें लोग अपना योगदान दे कर कुछ असाधारण कर सकें"

संकट प्रत्याशित एवं अप्रत्याशित किसी भी प्रकार का हो सकता है। कुछ घटनाएं आकस्मिक भी होती हैं। संकट प्रबंधन के दौरान कुशल **नेतृत्व** क्षमता का परिचय देना सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक कुशल व सजग लीडर वही है जो कि विषम परिस्थियों और मुश्किल हालातों में भी अपनी नेतृत्व क्षमता द्वारा लोगों का मनोबल बढ़ाए। उन्हें प्रेरित करे कि अंधेरे के बाद उजाला होना स्वाभाविक है अतएव मुसीबत की घड़ी के बाद अच्छा समय अवश्य आएगा। बस आवश्यकता है तो इस बात की कि संकट के दौरान हम हिम्मत न हारें, बुद्धिमानी से निर्णय लें और आशावादी बने रहें।

उदाहरण के तौर पर बैंक में वित्तीय संकट भी हो सकता है या फिर ऐसी कोई भी परिस्थिति जिससे संपूर्ण समाज या मानव वर्ग प्रभावित हो ऐसी स्थिति का सामना भी सभी को करना पड़ सकता है। आपदा चाहे किसी भी प्रकार का संकट हो ऐसे में बैंक में कार्यरत उच्च अधिकारी यदि अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हैं, संयम व सजगता से कार्य करने की सलाह देते हैं और यदि एक टीम वर्क के रूप में कार्य किया जाता है तो किसी भी चुनौती को परास्त करना संभव है और तभी व्यवसाय में सकारात्मक वृद्धि संभव है। सफल लीडर वही बन सकता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी लोगों की मनोदशा समझता हो, व्यावहारिक ज्ञान रखता हो, उनकी संवेदनाओं और मुश्किलों को समझकर ही उनके साथ टीम वर्क के रूप में कार्य निष्पादन की क्षमता रखता हो।

बैंकिंग क्षेत्र में बेहतर नेतृत्व कौशल अहम भूमिका रखता है। बैंक में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को कई जिम्मेदारियां निभानी होती हैं और एक ही समय में कई कार्यों का प्रबंधन करना होता है। चूंकि वे पैसे के लेने-देन का मामला देखते हैं, इसलिए उन्हें खास तौर पर न सिर्फ महत्वपूर्ण चीजों को देखने में सक्षम होना चाहिए बल्कि किसी भी प्रकार की अनियमितताओं और गलत कार्यों पर नजर भी रखनी चाहिए। साथ ही इन गलतियों के बड़ा मुद्दा बनने से पहले हल कर देना चाहिए। बेहतर संगठन कौशल द्वारा बैंक रिकॉर्ड्स और दस्तावेजों के रख-रखाव और प्रबंधन में भी मदद मिलती है जो कि एक

शेष पृष्ठ 22 पर →

कार्यपालक विमर्श

संकट, नेतृत्व एवं सफलता

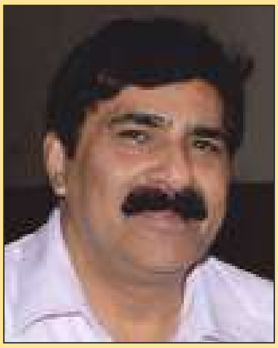

तिलक भूषण मेहता

अंचल प्रबंधक, कानपुर

नेतृत्व के लिए तीन 'आई' आवश्यक हैं।

- इंटेग्रिटी(निष्ठा)-इससे अभिप्राय सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं निष्पक्षता से है।
- इनसाइट(अंतद्दष्टि)- विषयों एवं स्थितियों की गहरी समझ।
- इंक्लूसिवनेस(सबको साथ लेकर चलने की भावना) –विस्तृत।

अगर यह कहा जाए कि संकट के समय सही नेतृत्व हमें सफलता की ओर ले जाता है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज का युग आपाधापी का युग है। जिसमें हम दिन-प्रतिदिन कठिन परिस्थितियों से हो कर गुजरते हैं। रोज सुबह उगने वाला सूरज हमारे सामने नई परिस्थितियां, नए लक्ष्य और नए समीकरण लेकर आता है। हमें इन सभी स्थितियों का सामना करते हुए अपना जीवन सफलता से जीना है। यह स्थितियां हमारे व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन में हो सकती हैं।

संकट का समय वह समय होता है जब व्यक्ति हर ओर से स्वयं को परेशानियों से घिरा हुआ पाता है। वह जो भी कार्य करना चाहता है उसके लिए सभी परिस्थितियां उसे विपरीत दिखाई देती हैं। लक्ष्य प्राप्ति असंभव प्रतीत होती है। ऐसे समय में चाहे एक व्यक्ति हो अथवा एक समूह अपने आप को असहाय अनुभव करता है।

वर्तमान समय में हमारे सामने सबसे बड़ा संकट **वैश्विक महामारी** कोरोना है जिसने हमारे जीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इससे देश की आर्थिक गतिविधियां भी प्रभावित हुई हैं और आमजन का व्यक्तिगत जीवन भी। इस कठिन समय में भी हमारे सभी साथी अपने परिवारों और अपने जीवन की परवाह न करते हुए अपने कार्य में जुटे हुए हैं। संपूर्ण देश लॉकडाउन से गुजरा है। सरकार द्वारा लोगों को अपने घरों में रहने की सलाह दी गई तथापि सभी बैंककर्मी शाखाओं में ग्राहकों को बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहे। संकट की इस घड़ी में हमारे प्रत्येक योद्धा ने अपना योगदान सफलतापूर्वक दिया है। इस तरह के विभिन्न संकट हैं जो हमारे जीवन में आते रहते हैं। इस संकट से बाहर आने और सफलता प्राप्त करने के लिए सही नेतृत्व परमावश्यक है।

सही नेतृत्व बड़े से बड़े संकट का सामना आसानी से करने में सहायता करता है और सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। यहां नेतृत्व के लिए आवश्यक गुणों पर चर्चा कर लेना समीचीन होगा। नेतृत्व के लिए तीन **'आई'** आवश्यक हैं।

- इंटेग्रिटी(निष्ठा)- इससे अभिप्राय सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं निष्पक्षता से है।
- इनसाइट (अंतर्दृष्टि) - विषयों एवं स्थितियों की गहरी समझ।
- इंक्लूसिवनेस(सबको साथ लेकर चलने की भावना) –विस्तृत।

संकट के समय सफलता प्राप्ति हेतु नेतृत्व में आवश्यक गुण :

निष्ठा : सही नेतृत्व वही व्यक्ति कर सकता है जो कि पूरी निष्ठा से लक्ष्य के प्रति समर्पित होता है। स्वयं को लक्ष्य से जोड़ने वाला व्यक्ति ही अन्य लोगों को इसके लिए प्रेरित कर सकता है।

सही निर्णय की क्षमता : संकट के समय सही निर्णय लेने की क्षमता नेतृत्व क्षमता का एक महत्वपूर्ण अंग है। वही नेतृत्व सफलता सुनिश्चित करता है।

सेल्फ सटिस्फैक्शन : नेतृत्व करने वाले को स्वयं यह समझना आवश्यक है कि हम अपने कार्य में अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत दें। दूसरों से आगे होने पर अपने प्रयासों के संबंध में सेल्फ सटिस्फैक्शन की अनुभूति भी प्राप्त

शेष पृष्ठ 24 पर

कार्यपालक विमर्श

संकट, नेतृत्व एवं सफलता

ओ. पी. वर्मा

अंचल प्रबंधक, लखनऊ

"ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता पड़ती है जिसका विजन साफ हो, जिसका चित्त स्थिर हो अर्थात जो संकट की घड़ी में विचलित न होने पाए। स्टाफ के साथ संवेदनशीलता से पेश आते हुए हमने इस संकट की घड़ी में सुबह प्रार्थना के समय व्यक्तिगत रूप से हर स्टाफ से हालचाल पूछना आवश्यक समझा"

जीवन सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत हमें अक्सर अनचाहे अप्रत्याशित संकटों का सामना करना पड़ता है फिर बात चाहे बैंकिंग उद्योग में दिनोंदिन आ रहे संकटों की करें या किसी और पेशे की, परंतु सच तो यही है कि हमारे आसपास इतनी अस्थिरता, इतना असमंजस और अनिश्चित जीवन स्थितियां हैं जिसके चलते हमें मन मजबूत करके जोखिम के प्रति रोमांच की भावना को बढ़ावा देते हुए संकट प्रबंधन करने की कोशिशों में जुटना जरूरी लगता है।

आकस्मिक रूप से आई महामारी कोविड-19 से मुकाबला करते हुए हम बैंकर्स को बड़े स्तर पर कई तरह की चुनौतियों से जूझना पड़ रहा है। एक तरफ तो हमारी शाखाओं में ग्राहकों की उमड़ती हुई भीड़ का नजारा है तो दूसरी तरफ दो मीटर की अपेक्षित दूरी का ख्याल रखना जिससे निपटने के लिए युद्धस्तर की तैयारी की जरूरत है। दूर दराज के गांवों व कस्बों में स्थित हमारी शाखाओं में आम ग्राहकगण सुदूर क्षेत्र से चलकर आते हैं जिन्हें अपनी श्रेष्ठ सेवाएं देने के प्रति हमारे बैंककर्मी सचेष्ट रहते हैं। हम बैंकर्स अनवरत उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने हेतु हर समय तत्पर रहते हैं। हमारे स्टाफ-सदस्य आमजन को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत राशि बांटने के लिए ग्राहकों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर हैं। देश की अर्थव्यवस्था में बैंकों का अहम योगदान है, यह सोचकर जमीनी स्तर पर उतरकर हमारे स्टाफ सदस्यों ने बढ़ चढ़कर इस चुनौती भरे समय में मुकाबला किया। ऐसे आपातकाल में भी आमजन के लिए अपनी शाखाएं खोलकर बैंक सेवाएं उपलब्ध कराई गईं। ऐसे संकटग्रस्त समय में ऐसा निर्णय लिया गया कि समुचित दूरी बनाने के लिए कुछ आवश्यक उपाय किए जाएं। हमारी शाखाओं ने वैसे उपाय किए। हमारे स्टाफ सदस्यों ने अपने स्तर पर गेट पर सैनिटाइजर्स रखे और ग्राहकों को यथेष्ट सुविधाएं प्रदान कीं। इस अवसर पर डिजिटल बैंकिंग के लिए हर ग्राहक को प्रोत्साहित करना हमारा पहला संदेश था जिसे हमने अपने बैंक के उच्च प्रबंधनवर्ग से परामर्श करके उचित व समय पर एक टीम भावना से काम करने की कोशिश की।

इस समय सबसे बड़ी चुनौती थी- हमारे स्टाफ सदस्यों की सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करना एवं उन्हें मानसिक रूप से मजबूती प्रदान करना। हमने समय-समय पर वीडियो कॉन्फ्रेंस करके उन्हें प्रेरित किया और जोर देकर कहा- 'ये संकट का समय है और ऐसे में यह हमारे बैंक के अस्तित्व की लड़ाई है जिसके लिए आप सब स्वयंसिद्ध योद्धा हैं और इस आपातकाल में हमारे लिए सबसे बड़ी चीज है- ग्राहक सेवा को अपना सबसे बड़ा धर्म समझना। इसके लिए सबसे जरूरी है- पूरी एहतियात बरतते हुए सावधानी से हर काम को अपनी क्षमता और शक्ति के अनुरूप कर्मयोद्धा समझकर करना। हमने सामूहिकता की भावना विकसित करने का प्रयास किया और सबका मनोबल बढ़ाने के लिए छोटी-छोटी ऑनलाइन बैठकें कीं। फोन पर हर समय उनका मार्गदर्शन किया और उनकी समस्याओं को संवेदनशीलता से सुनकर यथेष्ट मार्गदर्शन दिया गया। लॉकडाउन की आकस्मिक घोषणा के बाद स्टाफ सदस्यों को निकटवर्ती

शाखा/कार्यालय में कार्य करने की हमने समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित कीं।

हमारा सारा ध्यान इस विषय पर केंद्रित रहा कि हमारे कारोबार पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ने पाए ताकि हमारी श्रेष्ठ बैंकर की छवि कायम रह सके, एतदर्थ हमने अंचल कार्यालय समेत शाखाओं के लिए नई रणनीतियां तैयार कीं। ऐसी प्रभावी कार्ययोजनाएं भी हम तैयार करते रहे ताकि इस संकट की घड़ी में हमारा स्टाफ का ग्राहकों के साथ आत्मीयता से संवाद कायम रख सकें। रणनीतियों को कार्यान्वित करने के लिए हमने एक टीम बनाई जिससे हम अपने कारोबार को समुचित दिशा दे सकें। हमने ऐसे सामूहिक कार्य हर विभाग के स्टाफ की योग्यता, क्षमता, दक्षता और मेधा के अनुसार सौंपे जिसके समुचित व प्रभावी उपयोग से हम प्रधान कार्यालय द्वारा निर्धारित कारोबारी लक्ष्यों को हासिल कर सकें।

बेशक, इसके लिए ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता पड़ती है जिसका विजन साफ हो, जिसका चित्त स्थिर हो अर्थात जो संकट की घड़ी में विचलित न होने पाए। स्टाफ के साथ संवेदनशीलता से पेश आते हुए हमने इस संकट की घड़ी में सुबह प्रार्थना के समय व्यक्तिगत रूप से हर स्टाफ से हालचाल पूछना आवश्यक समझा ताकि उनके अंदर आत्मविश्वास की भावना मजबूत हो सके। हमने अपनी टीम तैयार की जिसने पूरी एकाग्रता, तन्मयता, लक्ष्य के प्रति निष्ठा और पूरे इन्वॉल्वमेंट के साथ लगातार काम किया। हम उनकी हौसला आफजाई करते और वे पलटकर अपने काम को पूरी लगन से करने में जुट जाते। हमने अपने कार्यालय में समुचित सकारात्मक वातावरण सृजित किया जिससे अपनी सीट पर काम करने वाले कार्मिक अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखते हुए आपस में निश्चित दूरी बनाए रखें। प्रशासनिक निर्णय लेने में हमने पारदर्शिता का पालन किया ताकि पक्षपातपूर्ण रवैया न दिखने पाए। सबके साथ न्याय व समान व्यवहार होता है तो उनके अंदर अपनी संस्था के प्रति लगाव अपने आप पैदा होने लगता है। जल्दी व समय पर निर्णय लेने की क्षमता उचित नेतृत्व का परिचायक है, सो हमने वैसा निर्णय समय समय पर लिया एवं अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ लोगों को उनकी प्रतिभा के अनुरुप काम सौंपे।

जाहिर सी बात है, हमने सफलताएं हासिल कीं। आज हम लगभग हर पैरामीटर पर अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं और यही है हमारे द्वारा सही समय पर लिए गए फैसले और अनुशासन में ढली जीवन शैली जिसके माध्यम से हमने जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंगभेद जैसा भेदभाव किए बिना सबके प्रति समान व्यवहार किया ताकि हम अपने स्टाफ का भरोसा जीत सकें जो हमें एक सूत्र में बांधता है। किसी ने सही कहा है-

टूटी हुई मुंडेर पर छोटा सा एक चिराग,
मौसम से कह रहा है आंधी चलाकर देख।

हमने ऐसी आंधियों का भरपूर मुकाबला किया और हमें अपेक्षित सफलताएं मिलीं।

सचमुच, यही है हमारी सफलता का जादू कि जब हम सकारात्मक सोच के तहत अपने कामों को निष्ठा और मेहनत करने के प्रति संलग्नता दर्शाते हैं तो नकारात्मक जीवन दृष्टि अपने आप तिरोहित होने लगती है और हम कुशलतापूर्वक संकट प्रबंधन की कला में दक्षता हासिल कर लेते हैं।

अ

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता
जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं।
मुंशी प्रेमचंद

चंचल मजुमदार

महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त)

भारतीय रिजर्व बैंक ने यह अनिवार्य कर दिया है कि राशि प्राप्त होने पर बैंकों को कुछ राशि भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा करनी होगी। मान लो बैंक को रु. 100/- प्राप्त हुए। सबसे पहले बैंक को रु. 3/- भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा करने होंगे। भारतीय रिजर्व बैंक इस रु. 3/- को चालू खाते में रखेगा, इसे नकद आरक्षित अनुपात या सीआरआर कहते हैं जो अभी 3% है................................

इसमें से रु.18.50 की केंद्र एवं राज्य सरकार की प्रतिभूति खरीदनी होगी। और हां, इस पर बैंकों को कुछ ब्याज भी मिलेगा। इसे सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के नाम से जाना जाता है जो अभी 18.50% है।

बैंकिंग लेख

सीआरआर, एसएलआर और रेपो रेट
भाई और बहन के बीच दिलचस्प बैंकिंग वार्तालाप

बहन: मैंने हाल ही में सुना है कि रिजर्व बैंक के गवर्नर ने रेपो रेट को 25 आधार पॉइंट्स घटा दिया है और हर कोई कह रहा है कि यह बाजार के लिए अच्छा है। लोन की ईएमआई में भी कमी आ सकती है। यह दर कटौती वास्तव में क्या है? मैं इसे समझना चाहती हूं।

भाई: इसे समझने के लिए तुमको सबसे पहले यह जानना होगा कि बैंक कैसे कार्य करता है।

बहन: क्यों?

भाई: क्योंकि ये सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। मुझे बताओ - एक बैंक क्या करता है?

बहन: बैंक जमाकर्ताओं से पैसा लेता है और ब्याज कमाने के लिए ऋण देता है। इस तरह वे सभी को खुश रखते हैं और लाभ भी कमाते हैं।

भाई: सही कहा। लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है। मैं इसे बहुत ही सरल तरीके से समझाता हूं। बैंक को पैसा चाहिए। बैंक को तुम्हारे और मेरे जैसे जमाकर्ताओं से और भारतीय रिजर्व बैंक से पैसा मिल सकता है। लेकिन बैंक को हमें और भारतीय रिजर्व बैंक को भी कुछ ब्याज देना होगा।

बहन: ठीक है।

भाई: आओ, पहले समझने की कोशिश करें - जब हम जमा करते हैं तो क्या होता है? मान लो हमने बैंक के पास रु. 100/- जमा किए।

बहन: मुझे पता है। बैंक उस व्यक्ति को रु. 100/- देता है जिसे ऋण की आवश्यकता होती है।

भाई: नहीं, यह इतना आसान नहीं है। याद रखो, हालांकि बैंक ऋण देकर ब्याज कमा सकते हैं, लेकिन यह बहुत जोखिम भरा भी है। ऋण चूक के कई मामले हैं। इस तरह बैंक हमारे सभी पैसे को उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में डाल सकते हैं। इसे संरक्षित करना होगा।

बहन: वो कैसे?

भाई: ठीक है, भारतीय रिजर्व बैंक ने यह अनिवार्य कर दिया है कि राशि प्राप्त होने पर बैंकों को कुछ राशि भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा करनी होगी। मान लो बैंक को रु. 100/- प्राप्त हुए। सबसे पहले बैंक को रु. 3/- भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा करने होंगे। भारतीय रिजर्व बैंक इस रु. 3/- को चालू खाते में रखेगा, इसलिए इस राशि पर बैंक को कोई ब्याज नहीं मिलेगा। इसे नकद आरक्षित अनुपात या सीआरआर कहते हैं जो अभी 3% है।

बहन: हां, फिर?

भाई: भारतीय रिजर्व बैंक ने यह भी अनिवार्य कर दिया है कि राशि प्राप्त करने पर बैंकों को अनिवार्य रुप से केंद्रीय और राज्य सरकार की प्रतिभूति खरीदनी होगी। मान लो, बैंक को रु. 100/- की राशि प्राप्त होती है तो इसमें से रु.18.50 की केंद्र एवं राज्य सरकार की प्रतिभूति खरीदनी होगी। और हां, इस पर बैंकों को कुछ ब्याज भी मिलेगा। इसे सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के नाम से जाना जाता है जो अभी 18.50% है।

बहन: ठीक है, तो तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि रु. 100/- प्राप्त होने पर बैंक अपनी इच्छा से केवल रु. 78.50 खर्च कर सकते हैं।

भाई: सही है। 100 - (3+ 18.50) = 100–21.50 = 78.50

बहन: लेकिन तुम कह रहे थे कि बैंक भारतीय

रिजर्व बैंक से भी उधार ले सकते हैं। बैंक भारतीय रिजर्व बैंक को कितने ब्याज का भुगतान करते हैं?

भाई: इससे पहले, बैंक भारतीय रिजर्व बैंक से राशि उधार लेने पर उसे 4.25% ब्याज का भुगतान करते थे। अब इस दर में 0.25 आधार अंकों की कमी की गई है। इसलिए बैंकों को अब भारतीय रिजर्व बैंक से उधार लेने पर 4% की दर से ब्याज का भुगतान करने की आवश्यकता है। इसे रेपो रेट के नाम से जाना जाता है।

बहन: क्या रेपो रेट में कमी से सावधि जमा दर प्रभावित हो सकती है?

भाई: बिल्कुल। अगर बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक से 4% की दर से राशि मिलती है तो बैंक मुझे और तुम्हें अधिक ब्याज क्यों देंगे? एक साल की सावधि जमा दर पहले ही कई बैंकों द्वारा संशोधित की जाती है और यह 5-5.25% या इसके बराबर है।

बहन: लेकिन जैसा कि अब बैंकों को सस्ती दर पर पैसा मिल रहा है, तो उन्हें ऋण की ब्याज दर को कम करना चाहिए यानी इसे मिलने वाले लाभों को अपने ग्राहकों को देना चाहिए।

भाई: सही है। उन्हें ऐसा ही करना चाहिए। और उस उम्मीद पर बाजार खुश हो रहा है। यदि कंपनियों को सस्ती दर पर ऋण मिलता है, तो वे अपने व्यवसायों का विस्तार कर सकते हैं। इससे अधिक रोजगार पैदा होगा, अधिक आय होगी और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा।

बहन: मुद्रास्फीति इससे कैसे जुड़ी है?

भाई: देखो, जब लोन सस्ता हो जाता है, तो लोग अधिक उधार लेने लगते हैं। इसका मतलब है कि लोगों के पास खर्च करने के लिए अधिक पैसा होगा। इससे माल की मांग बढ़ जाएगी, और अगर आपूर्ति इस मांग से मेल नहीं खाएगी तो कीमतें बढ़ेंगी।

बहन: तो मुद्रास्फीति भी बढ़ने के आसार हैं?

भाई: अच्छा, हां। लेकिन मुद्रास्फीति कई अन्य कारकों पर भी निर्भर करती है, जैसे उत्पादन (औद्योगिक और कृषि), विनिर्माण, निर्यात - आयात, विदेशी मुद्रा मूवमेंट आदि। इसलिए मुद्रास्फीति बढ़ भी सकती है या नहीं भी।

बहन: एक आखिरी सवाल, हम अपना पैसा बैंकों में जमा करते हैं, क्या बैंक भी अपना पैसा किसी के पास जमा करता हैं?

भाई: हाँ, वे भारतीय रिजर्व बैंक के साथ जमा कर सकते हैं और ब्याज भी कमा सकते हैं। यह ब्याज आमतौर पर रेपो रेट से 1% कम है। अब यह 3.35% है। इस दर को रिवर्स रेपो रेट के रुप में जाना जाता है।

बहन: बहुत बढ़िया! अब मैं सीआरआर, एसएलआर, रेपो रेट, रिवर्स रेपो रेट और जमा दर, ऋण ब्याज दर और मुद्रास्फीति पर उसके प्रभाव को समझ गई।

उपरोक्त दरें उदाहरणार्थ हैं।

06.08.2020 तक वर्तमान दरें निम्नानुसार हैं:

सीआरआर - 3%, एसएलआर - 18.50%, रेपो रेट - 4%, रिवर्स रेपो रेट -3.35% अ

शेषांश- पृष्ठ 17

संगठन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। वित्तीय मामलों से संबंधित काम जोखिम भरा होता है और बैंकिंग क्षेत्र के सभी पेशेवरों को इसे स्वीकारना चाहिए। बैंक अधिकारी भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक संरक्षक होते हैं और उनकी जिम्मेदारी है कि वे बैंकिंग क्षेत्र में किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितताओं या गलत काम को न होने दें। ऐसा करने के लिए, बैंक के सभी कर्मचारियों को बैंक और यहां तक कि बैंक के बाहर भी अपने आस-पास होने वाली सभी घटनाओं पर नजर रखनी चाहिए। उन्हें सभी संभावित जोखिमों के बारे में जागरूक होना चाहिए और किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना के मामले में उसके प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए सुरक्षा तंत्र विकसित करना चाहिए।

सफलता तभी संभव है जब किसी भी संस्थान का प्रत्येक वर्ग या कर्मचारी कार्यनिष्पादन से जुड़ा हो और लगातार सहयोग करे। एक सफल लीडर वही है जो कि श्रेष्ठ संकट प्रबंधन करे एवं तदनुसार कार्ययोजना बनाकर चरणबद्ध तरीके से अनुपालन करे और नेतृत्व क्षमता के नए आयाम स्थापित करते हुए संकट से उबार कर संगठन के लिए सफलता के नवीन द्वार खोले। संकटों से बचना तो संभव नहीं है परंतु कुशल नेतृत्व के माध्यम से इनसे होने वाले नुकसान को सीमित रखते हुए संगठन की सफलता को निश्चित किया जा सकता है। अ

वक़्त की लकीरें

एम. एस. 'मोती'
मुख्य प्रबंधक,
मॉडल बस्ती, नई दिल्ली।

लॉकडाउन ने इबादत को बेचैन कर रखा है! अन्तर में उठ रहे सवालों के जवाब ढूंढने के लिए वो चुपचाप खिड़की में जा बैठी और लैपटॉप की खिड़की खोल गूगल बाबा से सवाल पूछने लगी!

गूगल बाबा भी जवाब दे रहे हैं -

"यह कैसे हो सकता है ?"

"पर है!"

" पूरी दुनिया एक झटके से रुक गयी - जहाज , रेलगाड़ियां, समुद्री विमानों को एक दम से विराम ! कभी न सुना, न सोचा।"

और यह,

" मॉम, डैड, लक्की, बड़ी दी रिंकी सब को 'वर्क फ्राम होम' - न जाने कितने सालों से परिवार को इकट्ठा बैठने का छोड़ो - अच्छी तरह से बात करने का भी वक्त नहीं था।

-घर में हैं तो भी नहीं हैं!

-एक घर में इकट्ठे दिखते हैं - पर सारे इकल्ले-इकल्ले, अपने मोबाइलों से चिपके टिक-टॉक, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्स एप्प चैटिंग में व्यस्त - न जाने कौन सी दुनिया में !

मेरे सवाल, उलझनें हैं - पर जवाब कौन देगा ? मॉम का संडे किट्टी वाली सहेलियों के लिए था, डैड का अपना काम - लक्की व रिंकी रात भर मोबाइल में मसरूफ, दोपहर को जागते, नहाए बगैर पर्फ्यूम छिड़का और गाड़ी लेकर फुर्र! घर के खाने का स्वाद तो जैसे भूल गए थे- अब मजबूरी - 'लॉकडाउन'।

- टी. वी. चैनल, अखबार 'कोरोना'- 'सोशल डिस्टेंसिंग' - 'क्वारनटाईन' लॉक-डाउन मरीजों और मौत के आंकड़ों शब्दों से मुलाकात करा रहे हैं। दुनिया के सभी कोनों से डरावनी हो रही स्थिति की खबरें हैं - जिंदगी घर की दहलीज तक महदूद हो गई है। दहलीज के पार जैसे दुश्मन की सरहद हो जिसमें पैर रखते ही झपट लिए जाएंगे।

दुनिया भर से एक जैसी ही खबरें आ रही हैं।

यह कैसी खबर है ?

-कोरोना से किसी की मौत और परिवार ने शव लेने से इंकार कर दिया !

-एक उच्च सम्मान प्राप्त शख्सियत का गांव वालों ने शमशानघाट के गेट पर ताला लगाकर संस्कार रोक दिया - 'लॉक - डॉउन ?' ओह !' मौत शरमा गई' - 'मानव हाजिर हो ? '

- एक मजहब खास के लोगों को बीमारी फैलाने का जिम्मेदार ठहराने का कुप्रचार हो रहा है - सोशल मीडिया, डिजिटल मीडिया अपने - अपने काम में मस्त - व्यस्त - लोग पीड़ाग्रस्त - सूरते हाल यह है कि बाहर के मुल्कों से भी चीनी लोगों के प्रति नस्ली टिप्पणियां करने की खबरें हैं। शायद यह बेबसी की बौखलाहट हो।

मुझे इस सूरते हाल की समझ नहीं आ रही - सुलझाना तो दूर की बात। "

-किसी मुल्क के बाशिंदों ने मनोबल बढ़ाने के लिए घरों की खिड़कियों में खड़े होकर संगीतमय धुनें बजायी हैं।

-हमारे देश में भी ताली - थाली - घंटी और मोमबत्तियां।

-मेरी समझ से परे है कि इस सब का बीमारी से क्या लेनादेना ?

- 21 वीं शताब्दी में भी अंधविश्वास विज्ञान पर भारी या बेबाक खोखली दलीलों से आंकडों की खेल को सही ठहराने की कोशिश ?

-या फिर कबूतर के विश्वास को पक्का किया जा रहा है कि आंखें बंद करने से बिल्ली भाग जाती है।

-तालाबंदी, बेरोज़गारी से बेचैन लोगों ने राशन लेने के लिए बने 'दायरों' को तिलांजलि दे सैंकड़ों मील दूर अपने घर लौटने के लिए रेल पटरियों और सड़कों को मार्गदर्शक मानकर पैदल चलना शुरू कर दिया है। जिन रास्तों को बनाने के लिए पसीना बहाया उन्हीं पर पैदल चल कर घर पहुंचेगे ? बीमार, बुजुर्ग, औरतें - नंगे पाँव - सिर पर सामान की गठरियां - भूखे प्यासे बच्चे -पलायन ? सुना है कि इस से लोगों के मन में देश बंटवारे के दर्दनाक दौर की मनहूस यादें फिर से ताजा हो गईं हैं। लोग बताते हैं कि उस दौर में भी कितने राहों में ही रह गए - जो बचे वो भी मरों जैसे ही थे सासें चल रही थीं- जिंदगी की इच्छा मनफी थी।

- बकौल गूगल बाबा, उस समय जिंदगी को फिर से उभारने के लिए लोगों ने कम साधनों में जीने की जाच अपनाई थी - घर में एक दो कमरे होते थे - सारा परिवार एक साथ खाना खाता था। टी.वी. का प्रचलन हुआ तो भी साथ बैठकर देखते - बड़े बुजुर्ग मनोरंजक प्रोग्रामों को पसंद नहीं करते थे। दुख - सुख, कामकाज, प्यार, परिवार सांझे थे । कहते हैं कि ईगो, ईर्ष्या, दिखावे का रिवाज नामात्र था - सादा जीवन में विश्वास ।

-पता ही नहीं चला कब तरक्की ने विनाश का रूप ले लिया और हम लालचवश उन्हीं टहनियों को काटने लगे जिन पर खुद बैठे थे। अब शायद कुदरत ने अपना संतुलन बनाने के लिए करवट ली है।

इबादत और गूगल बाबा के दरमियाँ लैपटॉप की खिड़की से वार्ता चल रही है 'वक्त की लकीरें' धूल मुक्त हो रही हैं।

जीवन शैली के रंग दिखने लगे हैं - बाहर 'लॉकडाउन ' जारी है।

शेषांश- पृष्ठ 18

करें। यही भावना अपने समूह में भी जाग्रत की जानी चाहिए।

स्थितियों को अवसरों में परिवर्तित करना: केवल कठिन मेहनत करने से ही सफलता प्राप्त नहीं होती है अपितु सही समय पर सही कार्य करने पर सफलता मिलती है। इसमें नेतृत्व करने वाले के द्वारा स्थिति को पहचानना और उस स्थिति को अवसर में परिवर्तित करना महत्वपूर्ण है। बहुधा यह देखने को मिलता है कि अवसर हाथ से निकल जाने के उपरांत मन में विचार आता है अमुक प्रकिया अपनाने पर हम सफल हो सकते थे या फिर परिणाम इससे बेहतर होते इसलिए यह बहुत जरूरी है कि लक्ष्य/परिस्थिति के अनुरूप ही हमारे प्रयास रहें।

त्वरित निर्णय: सफलता प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि नेतृत्वकर्ता द्वारा लक्ष्य या परिस्थिति के अनुरूप त्वरित निर्णय लिया जाए। समय निकल जाने के उपरांत लिया गया निर्णय महत्वहीन होता है।

समूह सदस्यों के व्यक्तित्व का विकास : सफल नेतृत्व के लिए स्वयं के निर्णय दूसरों पर थोपना उचित नहीं है अपितु नेतृत्व करने वाले को संकटकालीन समय से स्वयं को बाहर निकालने की क्षमता का विकास अपने समूह के सदस्यों में भी करना है। इससे समूह का प्रत्येक सदस्य अपने आप को समूह से जुड़ा हुआ अनुभव करेगा, समस्या समाधान की प्रक्रिया से गुजरेगा। यह प्रक्रिया उसके आत्मविश्वास को उच्चस्तर पर ले जाएगी, जो कि किसी भी संस्था या व्यवसाय की उन्नति एवं संकट से बाहर आने के लिए आवश्यक है।

स्वयं को अपडेट करना : नेतृत्व के लिए यह जरूरी है कि वह स्वयं को अपडेट रखे। इससे उसे इंडस्ट्री स्तर पर होने वाले नवोन्मेष एवं परिवर्तनों की जानकारी रहेगी। इससे वह संकट के समय एक बेहतर कार्ययोजना का निर्माण कर सकेगा और समूह के सदस्यों को भी जानकारी अर्जित करने के लिए प्रेरित करेगा।

व्यक्तित्व : नेतृत्वकर्ता का व्यक्तित्व समूह के सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण होता है। संतुलित व्यवहार और कार्यप्रणाली में मानवीय पक्षों को महत्व देना नेतृत्वकर्ता से समूह सदस्यों के संबंध प्रगाढ़ करते हैं। अपने समूह के लीडर से जुड़ाव अनुभव करने पर समूह सदस्यों का कार्यनिष्पादन बेहतर देखा जाता है।

सही नेतृत्व किसी भी संकट से अपने समूह को बाहर लाने में सक्षम होता है। इससे कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। नेतृत्वशीलता वह गुण है जो संकटकालीन स्थिति से उबरने में सहायक होती है। संकट, नेतृत्व और सफलता तीनों आपस में जुड़े हुए हैं। सही नेतृत्व संकटकालीन समय में सफलता की गारंटी है।

रिपोर्ताज

जीवन के रंग- बहुरंग

जीवन कभी समानांतर ढंग से नही चलता बल्कि ढेर सारे उतार-चढ़ावों के साथ हम सबको आगे कदम बढ़ाने पड़ते हैं और इसी उठापटक के साथ सफर चलता रहता है जिंदगानी का। यूं तो हम सब अपने-अपने रूटीन कामों में बुरी तरह उलझे रहते हैं लेकिन हमारे बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके अंतस से निकलती हैं अथाह करूणा और निश्छल स्नेह की अविरल धारा। यूको बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ के मानव संसाधन प्रबंधन विभाग में तैनात वरिष्ठ प्रबंधक श्रीमती ईना शर्मा ने शुरु में ही अपने अंतस में बसी इस परदुखकातरता की अनुभूति को पहचान लिया था। बालपन से ही ईना शर्मा का मन पशुप्रेम से अभिभूत हो उठता था जिसे बड़े होने की सहज प्रक्रिया में उन्होंने बखूबी अपने निजी स्तर पर सड़क पर घूमते भूखे प्यासे दर्जनों जानवरों के प्रति अपने लगाव को दर्शाया।

सुश्री ईना शर्मा के दिन की शुरूआत उनके अपने घर से होती है जहां वे अपने पाले कुत्ते के अलावा घर के आसपास रहने वाले चार और श्वानों की देखरेख करती हैं। उनके लिए खुद खाना तैयार करती हैं और न केवल सादा खाना तैयार करतीं हैं बल्कि उनकी कोशिश रहती है कि वे अपने प्रिय श्वानों की पसंद का ख्याल रखें। खुद शाकाहारी होते हुए भी वे उनके लिए रोटी के साथ चिकन बनाती है तो कभी दूध, पैक्ड न्युट्रीशियन, पराठे व अन्य सभी स्वास्थ्यवर्धक खाना खुद तैयार करती हैं। बाहर रहने

वाले इन श्वानों को खाना खिलाने के बाद वे यूको बैंक, अंचल कार्यालय के आसपास विचरते श्वानों के लिए भी टिफिन तैयार

करती हैं। वह दफ्तर में दोपहर के खाने के बाद समय निकालकर बाहर निकलकर इन श्वानों को अपने हाथों से खुद खाना खिलाती हैं। सड़क पर आवारा घूमते श्वानों को आम तौर पर कोई छूना भी पसंद नही करता, मगर इस तरह के परहेज से परे वे खुद कहती हैं- ' मेरे परिवार का अभिन्न हिस्सा हैं ये सब। इन बेजुबानों को हमसे क्या चाहिए, कुछ भी तो नहीं। बस हम सबका आत्मीय संस्पर्श और थोड़ी सी देखरेख। अगर आप इनकी मदद नहीं कर सकते, कोई बात नहीं मगर आप इनका तिरस्कार तो मत कीजिए। प्लीज . . समझने की कोशिश कीजिए। ' कहते हुए उनकी तरल आंखों में श्वानों के प्रति निश्छल अनुराग की धाराएं फूट पड़ती हैं अनायास।

इन श्वानों के प्रति अपनी संवेदना और अनुराग को वे कतई नहीं छिपातीं बल्कि सुदूर आसमान में देखते हुए जैसे भावुक होकर कहने लगीं- 'मेरा सपना है कि मेरे पास एक बड़ा सा फार्म हाउस हो, जहां ढेरों लावारिस श्वान हों और अन्य ऐसे मूक जानवर भी हों जिन्हें वहां रखकर हम उनकी ठीक तरह से देखरेख कर सकें'।

सचमुच जिन श्वानों को हम सड़क पर आवारा मंडराते देखकर अक्सर खीझ उठते हैं और जब वे हमारे पास आते हैं तो हम उन्हें दुत्कारकर- हट, हट . .कहते हुए अपने से परे करना चाहते हैं, ठीक उसी समय ईना शर्मा ऐसे मूक श्वानों को अपने गले लगाने से नहीं चूकतीं। चाहे तेज बारिश हो या तेज धूप भरा आसमान, वे ऐसे मूक जानवरों के प्रति खाना लाना कतई नहीं भूलतीं। अपनी संवेदनशीलता व्यक्त करते हुए वे कहती हैं- ' इनकी भूख और तड़प मुझसे नहीं देखी जाती। धीरे-धीरे बेजुबानों का

कुनबा मदद की आस में बढ़ता गया और उसी अंदाज में बढ़ता गया मदद करने को आतुर ईना का जज्बा।

एक बार का वाकया याद है जब कड़कड़ाती ठंड के मौसम में अंचल कार्यालय परिसर के पास ही किसी श्वान के कई बच्चे हुए जिन्हें रहने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं हो पा रही थी, ऐसे में ईना अपनी प्रत्युत्पन्नमति से कुछ बोरियां, मोटी पॉलिथिन और अन्य आवश्यक सामान घर से लाईं और ठिठुरती ठंड में उन श्वान बच्चों को बचाने की मुहिम में जुट गईं। मूक असहाय श्वानों के प्रति एकाग्र भाव से सेवा करना सचमुच अनुकरणीय है और इसीलिए हम चाहते हैं कि अपना फार्महाउस खोलने का ईना शर्मा का सपना अवश्य साकार हो।

यूको बैंक के ऐसे नेकदिल कार्य करने में संलग्न साथियों का हम तहेदिल से स्वागत करते हैं। ईना शर्मा के इस प्रेरक व सराहनीय पहल से कई अन्य साथी भी प्रोत्साहित हों और वे भी अपनी-अपनी रुचि के अनुसार समाज के कमजोर तबकों की मदद के लिए आगे आएं तो धीरे-धीरे एक समरस लोककल्याणकारी समाज की परिकल्पना साकार की जा सकती है।

पशुओं से निभा रहीं परिवार के सदस्यों जैसा प्रेम

प्रस्तुति -
डॉ. रजनी गुप्त,
मुख्य प्रबंधक, राजभाषा
अंचल कार्यालय, लखनऊ

यूको बैंकः लाभप्रदता की ओर अग्रसर

सितंबर, 2015 से लगातार 17 तिमाही तक हानि में रहने के बाद 18 वीं तिमाही में हमारे बैंक ने पुनः शुद्ध लाभ कमाया है। हमारे ग्राहकों का हम पर भरोसा बनाए रखने के लिए हृदय से आभार तथा सभी यूकोजनों को उनके अतुल्य योगदान के लिए धन्यवाद एवं बधाई।

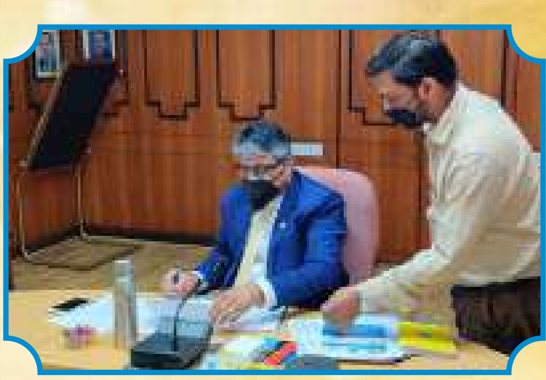

श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी 31.03.2020 को समाप्त तिमाही के तुलन पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए साथ में हैं श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक तथा अन्य अधिकारीगण

तकनीकी लेख

साइबर सुरक्षा एवं मानवीय निर्भरता

अविनाश शुक्ला

उप महाप्रबंधक एवं
मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

" हैकिंग अक्सर "ब्रूट फोर्स" (बार-बार प्रयास) पर निर्भर नहीं होती क्योंकि इसके लिए भारी कंप्यूटिंग क्षमता के साथ-साथ पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है जिससे सिस्टम में कमजोरियों को खोजने और संबंधित सुरक्षा को चकमा देने और सफल हमले करने के प्रयास हो सके। यही कारण है कि हैकर्स अब उन्नत टूल्स एंड टेक्नोलॉजी के साथ सोशल इंजीनियरिंग के संयोजन की ओर रुख कर रहे हैं।"

साइबर सुरक्षा से तात्पर्य संगठनों, व्यक्तियों या नेटवर्क को डिजिटल हमलों से बचाने के लिए लोगों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकी के साथ सुरक्षा उपायों को लागू करना है। सिस्टम में कमजोरियों का फायदा उठाकर ही हमले संभव हैं। सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, नेटवर्क, भौतिक पहुंच के साथ-साथ मानव संसाधन में भी कमजोरियां हो सकती हैं।

सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर और नेटवर्क में कमजोरियों का पता लगाने के लिए सिस्टम और तरीके हैं और उनका उपयोग करके ही हैकर्स (नैतिक एवं अनैतिक दोनों हैकर्स) संस्थानों के साइबर सुरक्षा घेरे को तोड़ते हैं। हैकर्स अंधेरे कक्ष में कंप्यूटर कोडिंग की हजारों लाइनें और कई कंप्यूटरों के पीछे अपना चेहरा छिपाकर काम करने वाले होते हैं और उनका लक्ष्य नेटवर्क और सिस्टम में अनैतिक रूप से अपना रास्ता बनाना होता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है। हैकिंग अक्सर "ब्रूट फोर्स" (बार-बार प्रयास) पर निर्भर नहीं होती क्योंकि इसके लिए भारी कंप्यूटिंग क्षमता के साथ-साथ पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है जिससे सिस्टम में कमजोरियों को खोजने और संबंधित सुरक्षा को चकमा देने और सफल हमले करने के प्रयास हो सके। यही कारण है कि हैकर्स अब उन्नत टूल्स एंड टेक्नोलॉजी के साथ सोशल इंजीनियरिंग के संयोजन की ओर रुख कर रहे हैं।

आज, साइबर-हमले सोशल इंजीनियरिंग तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला पर आधारित हैं जिसमें फ़िशिंग की उपश्रेणियों जैसे "अवांछित ई-मेल, टेक्स्ट संदेश और कथित रूप से एक वैध कंपनी द्वारा व्यक्तिगत, वित्तीय और/या लॉगिन विवरण के लिए अनुरोध आदि" से लेकर उपयोगकर्ता के ज्ञान के बिना मैलवेयर या एक्सेस डेटा अपलोड करने के लिए फ्लैश ड्राइव या यूएसबी चार्जिंग आउटलेट जैसे उपकरणों का रणनीतिक रूप से प्लेसमेंट शामिल होता है।

जैसे जैसे साइबर सुरक्षा की तकनीक उन्नत हो रही है हैकर्स का कार्य भी दूभर होता जा रहा है। क्यूंकि मनुष्य बहुत संवेदनशील प्राणी है, हैकर्स का वह प्रमुख लक्ष्य बन गया है । मानवीय संवेदनाओं का उपयोग करके सुरक्षा में सेंध लगना अब हैकर्स को टेक्नोलॉजी से ज्यादा आसान लग रहा है।

मानव संसाधन : कमजोर कड़ी

कर्मचारी कई रुपों में साइबर हमले का शिकार बन सकते हैं। वे लापरवाह हो सकते हैं, वे बेख़बर हो सकते हैं, या उनके कार्य दुर्भावनापूर्ण हो सकते हैं। मानवीय त्रुटियां कई प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी कर्मचारी द्वारा किसी कार्य उपकरण का खो जाना, कमजोर पासवर्ड का उपयोग करना, असुरक्षित URL या अनुलग्नक पर क्लिक करना , पासवर्ड साझा करना , गलत प्राप्तकर्ता को ई-मेल भेजना या अपने उपकरणों को लॉग इन करके और अनअटेंडेड छोड़ने में से कुछ भी शामिल हो सकता है। अप्रशिक्षित उपयोगकर्ता मजबूत पासवर्ड न बनाने, पासवर्ड लिखकर रखने या सहकर्मियों के साथ साझा करने सहित कई अन्य गलतियां करते हैं, जिससे सूचना सुरक्षा भंग होने की संभावना होती है।

कुछ मामलों में कर्मचारी जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी के कारण सोशल इंजीनियरिंग के प्रयासों के भी शिकार होते हैं। यह भी देखा गया है कि कुछ मामलों में कर्मचारी साइबर सुरक्षा आवश्यकताओं को बहुत हल्के में लेते हैं, जिससे वे जाने अनजाने उन संगठनों के लिए खतरा बन जाते हैं जिनके लिए वे काम करते हैं। उदाहरण के लिए, कभी-कभी कुछ कर्मचारी क्षणिक परेशानियों से बचने के लिए अपने कंप्यूटर पर सुरक्षा समाधानों को अक्षम कर देते हैं और अनजाने में अपने कॉरपोरेट नेटवर्क पर अपने कंप्यूटर से संक्रमण को फैलने देते हैं। यह दिखाता है कि कर्मचारी, चाहे जानबूझकर या अपनी स्वयं की लापरवाही या ज्ञान की कमी के माध्यम से, संगठन को जोखिम में डाल रहे हैं। कभी-कभी वे कर्मचारी जो बहुत विश्वसनीय समझे जाते हैं एवं जो संस्था के बारे में बहुत ही गोपनीय जानकारी रखते हैं, संगठन के विरुद्ध हो जाने पर वे बहुत ही हानिकारक हो सकते हैं।

साइबर अपराधी सॉफ्टवेयर/नेटवर्क में लगातार नई कमियां/कमजोरियों की तलाश करने की कोशिश करते रहते हैं एवं ज्ञात कमजोरियां पर भी नजर रखते हैं और उस का उपयोग सिस्टम तक पहुंच हासिल करने के लिए करते हैं। जैसे ही कोई त्रुटि या भेद्यता पता लगती है तो सॉफ्टवेयर डेवलपर्स एवं साइबर क्रिमिनल की दौड़ शुरु हो जाती है। इससे पहले साइबर क्रिमिनल और ज्यादा संसाधनों को संक्रमित करें, सॉफ्टवेयर डेवलपर्स को त्रुटि या भेद्यता को ठीक करके सभी उपयोगकर्ता को पैच उपलब्ध करना होता है। यही कारण है कि यह आवश्यक है कि सुरक्षा पैच उपलब्ध होते ही उपयोगकर्ता उसे अपने कंप्यूटर पर इंस्टॉल करे। दुर्भाग्य से, अधिकतर उपयोगकर्ता अपडेट की स्थापना (इनस्टॉलेशन) में देरी करते हैं जिसके कभी-कभी बहुत ही गंभीर परिणाम भी हो सकते हैं।

“2017 WannaCry रैनसमवेयर हमले ने दुनिया भर में हजारों कंप्यूटरों को प्रभावित किया, कंपनियों और संगठनों को लाखों डॉलर का नुकसान हुआ। यह इटरनलब्ल्यू एक्सप्लॉइट के माध्यम से फैला था जो कि अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनएसए) द्वारा विकसित किया गया था। हमला होने से पहले माइक्रोसॉफ्ट द्वारा सुरक्षा पैच भी जारी किया गया था। यदि प्रभावित कंप्यूटरों में केवल सुरक्षा पैच डाउनलोड और इंस्टॉल किया गया होता तो कोई भी कंप्यूटर इससे प्रभावित नहीं होता”।

साइबर दुनिया में मानवीय त्रुटियों को कैसे रोका जाए?

कंप्यूटर कार्यों में अधिकांश मानव त्रुटियों का कारण कार्य को करने का सही तरीका न जानने का परिणाम होता है। उदाहरण के लिए, जिन उपयोगकर्ताओं को फ़िशिंग के जोखिम के बारे में पता नहीं है, उनके फ़िशिंग के प्रयासों में फंसने की संभावना अधिक होती है और कोई व्यक्ति जो सार्वजनिक वाई-फाई नेटवर्क के जोखिमों को नहीं जानता है, उनकी डिवाइस हैक होने की संभावना अधिक होती है। ज्ञान की कमी उपयोगकर्ता की गलती नहीं है - लेकिन उपयोगकर्ता द्वारा स्वयं ही इसका समाधान करना होगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके पास उभरते साइबर खतरों के बीच खुद को बचाए रखने के लिए आवश्यक जानकारी और कौशल है।

मानव त्रुटि केवल वहां हो सकती है जहां ऐसा करने का अवसर है और इस तरह जितना संभव हो उतना त्रुटि के लिए अवसरों को खत्म करना आवश्यक है। साथ ही उपयोगकर्ता (एंड-यूजर्स) गलतियां करना तब तक जारी रखेंगे जब तक वे नहीं जानते हैं कि कंप्यूटर का उपयोग करने का सही तरीका क्या हैं और उसमे जोखिम क्या हैं।

इस अंतर को पाटने के लिए दोनों ओर से कार्य करना आवश्यक है। एक तरफ तो पर्याप्त नियंत्रण और उपायों द्वारा मानवीय त्रुटि के अवसरों को कम किया जाए एवं दूसरी तरफ साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में जागरूकता प्रदान की जाए।

विशेषाधिकार नियंत्रण, पासवर्ड प्रबंधन, भूमिका आधारित पहुंच, प्रभावी निगरानी या 'जीरो ट्रस्ट- ट्रस्ट नो वन, वेरीफाई एवरीवन', के कार्यान्वयन से गलतियों के अवसरों में कमी आएगी।

दूसरी ओर जागरूकता और प्रशिक्षण मानवीय त्रुटियों को कम करने में मदद करेगा। जागरूकता पैदा करना कर्मचारियों और नियोक्ता दोनों की संयुक्त जिम्मेदारी है। प्रशिक्षण आकर्षक और प्रासंगिक होना चाहिए और पोस्टर, लघु संदेश, ई-मेल, लघु वीडियो आदि के उपयोग से विषयों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए। समय-समय पर प्रशिक्षण दोहराना चाहिए।

जान-बूझकर या अनजाने में इंसान से गलतियां होती हैं। वास्तव में गलतियां करना मानव अनुभव का एक मुख्य हिस्सा

है - इसी से हम सीखते हैं और बढ़ते हैं। लेकिन साइबर सुरक्षा के मामले में मानवीय त्रुटियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह साइबर- अपराधियों को सभी आवश्यक साइबर सुरक्षा उपायों के बावजूद आसानी से सिस्टम के अंदर तक पहुंच प्राप्त करने में सक्षम बना सकता है क्योंकि लोगों को सॉफ्टवेयर भेद्यताओं की तरह पैच नहीं किया जा सकता है, संगठनों का लक्ष्य मानव भेद्यता से जुड़े जोखिमों को कम करना है। नियमित साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण जैसे उपायों के माध्यम से उपयोगकर्ता साइबर अपराधियों द्वारा उत्पन्न खतरे से जागरूक होकर परेशानियों से बच सकता है। इस प्रकार की पहल से साइबर अपराधियों द्वारा प्रत्येक वर्ष भारी मात्रा में चुराई गई धनराशि को कम किया जा सकता है।

प्रतिदिन खतरे का परिदृश्य विकसित हो रहा है, नए उपकरण और दृष्टिकोण नियमित रुप से उभर रहे हैं, लेकिन एक चीज स्थिर है: मानव व्यवहार। जहां अप्रशिक्षित उपयोगकर्ता किसी भी संगठन की सुरक्षा में सबसे कमजोर कड़ी साबित हो सकते हैं वहीं सही प्रशिक्षण और जागरुकता उपयोगकर्ताओं को किसी भी हमले या उल्लंघन के खिलाफ सशक्त बनाती है, जिससे दीर्घकालिक एवं सुदृढ़ सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

सतर्क रहें ! सुरक्षित रहें !! अ

अनुगूँज के पिछले अंक

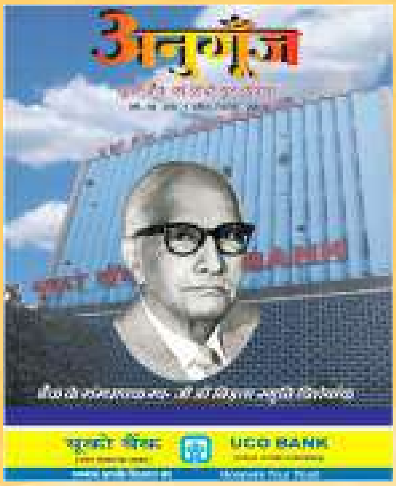

वर्ष 10, अंक 1: बैंक के संस्थापक स्व.जी डी बिड़ला स्मृति विशेषांक
*आमुख लेख
बैंक के संस्थापक स्व. घनश्याम दास बिड़ला – रोचक तथ्य
मुझसे सब अच्छे – जी डी बिड़ला
हिंदी प्रचार कैसे ? जी डी बिड़ला
*कार्यपालक विमर्श
एस के सचदेवा
ए के मछारी
अश्विनी कुमार
धीरज पटवर्धन
आशीष कुमार सरकार
दिलीप सिंह राठौर
*भाषा सौहार्द – बांग्ला, पंजाबी, मराठी एवं तमिल भाषा में सामग्री

वर्ष 10- अंक 2: ग्रामीण अर्थव्यवस्था, डिजिटल बैंकिंग, साइबर सुरक्षा
*कार्यपालक विमर्श
सत्यरंजन पंडा
एस के सांख्यान
कपिल सेठ
अशोक तेलंग
*भाषा सौहार्द – असमिया, गुजराती, मलयालम और ओड़िया भाषा में सामग्री
*बैंकिंग इंडस्ट्री और वर्क फ्राम होम
*डिजिटल बैंकिंग – एक परिदृश्य
*साइबर अपराध : रोकने के उपाय
*क्या गंगा नदी कावेरी या गोदावरी की शत्रु है?
*विश्व पुस्तक दिवस – एक जानकारी
*कंप्यूटर सुरक्षा दिवस – एक रिपोर्ट

कोरोना काल में बैंक शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण

डॉ सुधीर कुमार साहु

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

अंचल कार्यालय, जयपुर

"संस्थाओं के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से अन्य कार्यों की तरह राजभाषायी कार्यों के अनुपालन को भी बढ़ावा मिलता है। यदि किसी बैंक को कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होता है तो यह उस बैंक के लिए सम्मान की बात होती है। साथ ही, सरकार, जनता एवं वित्त मंत्रालय की नज़र में उस बैंक की छवि सुधर जाती है, उसपर सबका भरोसा बढ़ जाता है।"

राजभाषायी निरीक्षण : क्या और क्यों?

हमारा बैंक एक राष्ट्रीयकृत बैंक है, जिस पर संविधान के राजभाषा संबंधी प्रावधान, राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 लागू होते हैं। उन नियमों का पालन किया जा रहा है या नहीं, इसकी जांच करने के लिए विभिन्न संस्थाओं को बैंकों का राजभाषायी निरीक्षण करने का अधिकार/दायित्व प्रदान किया गया है। संसदीय राजभाषा समिति, भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं उसके द्वारा नियुक्त किए गए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों, विभिन्न नगरों में स्थापित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अलावा बैंकों के नियंत्रक कार्यालयों द्वारा बैंक के कार्यालयों एवं शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों का राजभाषायी निरीक्षण वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा भी किया जा सकता है। इसलिए जरूरी है कि हर शाखा/कार्यालय हर समय ऐसे निरीक्षण के लिए तैयार रहे।

राजभाषायी निरीक्षणकर्ताओं का दृष्टिकोण

हमारे देश को 'क', 'ख' एवं 'ग' भाषायी क्षेत्रों में बांटकर स्थानीय राजभाषा को जनता/ग्राहक के साथ संवाद की भाषा निर्धारित की गई है। केन्द्र सरकार की संस्थाएं/उपक्रम देश के सभी राज्यों में हैं। इनमें से जो 'क' क्षेत्र में स्थित हैं उन्हें पत्राचार एवं कामकाज शत-प्रतिशत हिंदी में करना है। 'ख' एवं 'ग' क्षेत्रों में स्थित संस्थाओं/उपक्रमों के लिए पत्राचार का कुछ कम प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित है, क्योंकि उन्हें कुछ पत्राचार स्थानीय ग्राहकों/जनता के साथ भी करना होता है। इसी की जांच करने और संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदनों में दिए गए आंकड़ों की तुलना में वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए निरीक्षण करने का प्रावधान किया गया है।

राजभाषायी निरीक्षण का पुरस्कारों से संबंध

हमारे राष्ट्रनिर्माताओं की सोच रही है कि देश की अनेक समृद्ध एवं प्राचीन राजभाषाओं में से एक हिंदी, हमारे देश की स्वाभाविक संपर्क भाषा रही है। इसी दृष्टिकोण से राजभाषायी नियमों का श्रेष्ठ अनुपालन करने पर तीन स्तरों पर पुरस्कारों का प्रावधान किया गया है – नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों तथा भारत सरकार के गृह मंत्रालय के स्तर पर। इसके अलावा संस्था के स्तर पर भी पुरस्कारों का प्रावधान किया जाता है। जैसे हमारे बैंक में अंचल कार्यालय एवं प्रधान कार्यालय स्तरों पर राजभाषा शील्ड प्रदान करने की व्यवस्था है। निरीक्षण करते समय निरीक्षक अन्य शाखाओं/कार्यालयों की तुलना में राजभाषायी अनुपालन की श्रेष्ठता का विचार भी करते हैं। निरीक्षण से घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि यह प्रसन्नता की बात है। खासकर, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जब किसी बैंक का निरीक्षण किया जाता है, तो इसे उस बैंक को राजभाषा शील्ड प्राप्त होने की संभावना के रूप में देखा जाता है।

हम काम पुरस्कार के लिए नहीं करते

संस्थाओं के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से अन्य कार्यों की तरह राजभाषायी कार्यों के अनुपालन को भी बढ़ावा मिलता है। यदि किसी बैंक को कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होता है तो

यह उस बैंक के लिए सम्मान की बात होती है। साथ ही, सरकार, जनता एवं वित्त मंत्रालय की नज़र में उस बैंक की छवि सुधर जाती है, उस पर सबका भरोसा बढ़ जाता है। ऐसे पुरस्कार प्राप्त करना किसी भी संस्था का अधिकार होता है और उसे पुरस्कार दिलाने का प्रयास करना हमारा कर्तव्य। इसीलिए हम सभी को स्वयं समस्त कामकाज, पत्राचार आदि हिंदी में करना चाहिए ताकि कार्यालय/शाखा अपने सभी संबंधित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। इसके बाद हमें प्रयासरत होना चाहिए कि हमारे कार्यालय/शाखा का निरीक्षण जरूर हो, ताकि पुरस्कार प्राप्त होने की संभावना बढ़े।

ऑनलाइन निरीक्षण कार्यक्रम

राजभाषा के क्षेत्र की सर्वोच्च समिति, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किसी भी बैंक की किसी भी शाखा का हिंदी निरीक्षण किया जा सकता है। लेकिन यह समिति शाखा/कार्यालय में स्वयं नहीं जाती। लोकसभा एवं राज्य सभा के माननीय सदस्यों में से मनोनीत सदस्यों से युक्त इस समिति के समक्ष एक नियत स्थान पर शाखा प्रमुख/कार्यालय प्रमुख को प्रधान कार्यालय के प्रमुख अथवा कम से कम महाप्रबंधक स्तर के कार्यपालक के नेतृत्व में आंकड़ों एवं साक्ष्य के साथ उपस्थित होना होता है। इसमें गृह मंत्रालय एवं वित्त मंत्रालय के राजभाषा प्रतिनिधि भी उपस्थित रहते हैं। हालांकि अभी तक इस समिति द्वारा ऑनलाइन निरीक्षण का कोई कार्यक्रम जारी नहीं किया गया है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तहत आठ क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय देशभर में कार्यरत हैं, जहां सहायक/उप निदेशक पदस्थ होते हैं। बैंक की प्रत्येक शाखा ऐसे किसी न किसी कार्यालय के अधिकार क्षेत्र में जरूर आती है और कभी भी एक-दो दिन पहले सूचना देकर किसी भी शाखा/कार्यालय का निरीक्षण किया जा सकता है। इसलिए निरीक्षण की पूर्व तैयारी रखनी जरूरी होती है। खासकर, कोरोना संकट काल के कारण क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा ऑनलाइन निरीक्षण प्रारंभ करने के बाद जरूरी हो गया है कि हम अपने बैंक की हर शाखा को इसके लिए पहले से तैयार रखें। हमारे बैंक के **"संकल्प राजभाषा 2020"** अभियान को सफल बनाने के लिए भी यह जरूरी है कि हमारी किसी भी शाखा के राजभाषायी निरीक्षण में हम एक भी प्रतिकूल टिप्पणी न होने दें।

ऑनलाइन निरीक्षण कार्यक्रम की तैयारी

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग ने वर्ष 2020-21 के दौरान बैंक की सभी शाखाओं के राजभाषायी निरीक्षण का कार्यक्रम जारी किया है, जो अंचल कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों द्वारा जुलाई 2020 से जनवरी 2021 की अवधि में सम्पन्न किए जाएंगे। निरीक्षण का कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किया गया है, जिससे शाखाओं के कामकाज में कम से कम व्यवधान हो। माइक्रोसॉफ्ट टीम्स एप के माध्यम से निरीक्षण प्रारंभ किया जाता है, जिसके लिए लिंक भेज दिया जाता है। कई दिन पहले इसकी जानकारी ई-मेल द्वारा शाखा को दी जाती है जिसके साथ निरीक्षण रिपोर्ट का प्रारूप भेजा जाता है। निरीक्षण रिपोर्ट के प्रारूप को पिछली तिमाही की हिंदी प्रगति रिपोर्ट के आंकड़ों के आधार पर भरकर शाखा प्रमुख के हस्ताक्षर के बाद इसे वापस राजभाषा विभाग को भेजना होता है। इसके साथ कुछ अन्य कागजात एवं तस्वीरें मंगाई जाती हैं, जिनकी पूरी सूची ई-मेल के जरिये पहले ही भेज दी जाती है :-

1) शाखा द्वारा भेजे गए ई-मेल, पत्र, वसूली नोटिस, अन्य पत्रों की स्कैन प्रति अथवा तस्वीरें
2) फाइल कवर, पंजियों (रजिस्टरों) के कवर की तस्वीर
3) चेकबुक पंजी, डाक/पत्रांक पंजी की प्रविष्टियों वाले पृष्ठ
4) आंतरिक वाउचर (अंतरण, समाशोधन एवं कार्यकारी व्यय के जमा-नामे (क्रेडिट-डेबिट)
5) साइन बोर्ड, काउंटर बोर्ड, बैनर, पोस्टर, नोटिस बोर्ड, विजिटिंग कार्ड आदि की तस्वीरें
6) हिंदी दिवस/सप्ताह मनाने के साक्ष्य या उसकी रिपोर्ट
7) हिंदी फाइल, तिमाही बैठक की पंजी की तस्वीरें
8) शाखा में मौजूद सभी रबर की मोहरों की एक कागज पर छाप

इन सारी चीजों की स्कैन प्रतियां/तस्वीरों को आधे घंटे में जुटाकर उन्हें राजभाषा अधिकारी के मोबाइल पर व्हाट्सएप किया जा सकता है। यह काम निरीक्षण से एक दिन पहले तक संपन्न कर लेना चाहिए ताकि निरीक्षक को उनका अध्ययन करने का समय मिल सके और ऑनलाइन निरीक्षण कम से कम समय में समाप्त हो सके।

प्रतिकूल टिप्पणियों से बचने के लिए इन बातों का ध्यान रखें :-

1)प्रत्येक तिमाही के बीच के माह में ग्राहक सभा के साथ शाखा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती है। उसमें सभी स्टाफ को बताएं कि इस कंप्यूटर युग में हिंदी में शत-प्रतिशत काम करना बहुत आसान है। आजकल पत्राचार का लगभग 98% ई-मेल के जरिये किया जाता है। द्विभाषी अर्थात हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी ई-मेल/पत्र को हिंदी माना जाता है। ई-मेल/पत्र हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी में तथा हिंदीतर क्षेत्रों में द्विभाषी रुप में भेजने चाहिए। इसके लिए राजभाषा विभाग से प्राप्त पिछले हिंदी/द्विभाषी ई-मेल/पत्र के प्रारूप का उपयोग करें, उसे ही फारवर्ड करके नया ई-मेल/पत्र बनाएं। इससे सारे ई-मेल/पत्र हिंदी/द्विभाषी हो जाएंगे।

2)वाउचर बनाने या पंजियों में प्रविष्टि करने के लिए केवल दो-तीन शब्द आसान हिंदी में लिखने होते हैं। इसमें भी यदि किसी अंग्रेजी शब्द की हिंदी याद नहीं आ रही हो तो उसे देवनागरी लिपि में लिखने से भी उसे हिंदी मान लिया जाता है। आजकल फिनेकल के अलावा आंतरिक कामकाज के बस यही दो काम हाथ से करने के रह गए हैं। इससे शाखा का पूरा कामकाज हिंदी में हो जाता है। इसके बाद नियमानुसार सभी अधिकारियों एवं लिपिक वर्ग के कर्मचारियों को बैंक का समस्त कामकाज हिंदी में करने का व्यक्तिश: आदेश शाखा प्रमुख के हस्ताक्षर से जारी कर दें। आदेश अलग-अलग नाम से पत्र संख्या सहित दें और उसकी प्रति संबंधित कार्मिक के हस्ताक्षर कराकर हिंदी फाइल में रखें। उसकी एक प्रति राजभाषा विभाग को भी भेज दें। हिंदीभाषी क्षेत्रों में लगातार प्रयोग से प्रत्येक कार्मिक को प्रवीणता के समकक्ष ज्ञान हो जाता है। जिस कार्मिक की शैक्षणिक योग्यता कम हो उससे पहले घोषणा-पत्र भरवा लें कि उसे हिंदी में प्रवीणताप्राप्त है। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में सभी (80% से अधिक) कार्मिकों को बैंक के खर्च पर प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण दिलाकर परीक्षाएं पास कराई गई हों और शाखा को हिंदी में अधिसूचित कराया गया हो तभी व्यक्तिश: आदेश दिया जा सकता है।

निरीक्षण रिपोर्ट के साथ जो चीजें मंगाई गई हैं, अगर वे हिंदी में नहीं हैं तो तुरंत उसे हिंदी में करना शुरु करा दें। जैसे यदि अभी तक चेकबुक निर्गम पंजी में हिंदी में प्रविष्टि नहीं हो रही है या कोई व्यक्ति वाउचर हिंदी में नहीं बना रहा है तो तुरंत शुरु करा दें ताकि उसकी तस्वीर भेजी जा सके या कहे जाने पर उसे वेबकैम में दिखाया जा सके।

कंप्यूटरों में हिंदी में काम

यदि शाखा के किसी कंप्यूटर में हिंदी में काम करने की सुविधा नहीं है तो बड़ी आसानी से उसमें यूनिकोड सक्रिय किया जा सकता है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार सरकारी बैंक के हर कंप्यूटर को हिंदी में काम करने लायक होना चाहिए। देखें कि शाखा के हर कंप्यूटर में टास्क बार पर En या Eng लिखा दिख रहा है या नहीं। इसपर क्लिक करने से Hi हो जाता है और अंग्रेजी में ही टाइप करने से हिंदी में छपने लगता है। जैसे **kamal** टाइप करने पर **कमल** छप जाता है। जिन कंप्यूटरों के टास्क बार पर En या Eng लिखा नहीं दिख रहा है उनमें यूनिकोड सक्रिय करने के लिए एडमिन पासवर्ड के लिए एचपी कॉल लॉज करें। जिन कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करना है उन सभी की पीसी संख्या लिखें और सर्विस में Active Service Directory चुनें। जवाब में जो प्रक्रिया बताई जाए उसके अनुसार लॉगिन करके यूको ऑनलाइन के Quick Links – All Links में Bilingual..... वाले लिंक को क्लिक करें। आईएमई इंडिक कीबोर्ड टूल 2 या 3 के 32/64 बिट का टूल (जितने बिट का वह पीसी हो) एक क्लिक से डाउनलोड और दूसरे क्लिक से इन्स्टाल हो जाएगा। इसके बाद टास्क बार पर En या Eng दिखने लगेगा। इंटरनेट पीसी पर भी यूको ऑनलाइन के राजभाषा खंड में यूनीकोड सक्रियण के उक्त उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं।

मोहरों का द्विभाषी होना

शाखा में कोई ऐसी रबड़ की मोहर न रखें जो नियमों के अनुसार न बनी हो। मोहर वही सही है जो हिंदी और अंग्रेजी दोनों में बनी है, हिंदी पहले या ऊपर है और हिंदी के अक्षर अंग्रेजी से छोटे या पतले नहीं हैं। मोहरों की एक सूची राजभाषा विभाग द्वारा बार-बार मेल की जाती है। उसे एक बार सेव करके रख लें। एक प्रति प्रिंट करके हिंदी फाइल में भी रखें। शाखा की सभी मोहरों की एक कागज पर छाप लगाकर देखें। जो मोहरें गलत बनी हों, यदि वे काम की न हों तो उन्हें शाखा में न रखें, नष्ट करा दें। जो काम की हों उन्हें मोहरों की सूची में ढूंढ़कर टिक लगाते जाएं। फिर मोहरों बनाने वाले को वह सूची देकर नई मोहरें बनवा लें। उसमें केवल शाखा का नाम बदलना होगा। किसी कागज पर लगकर

मोहर की छाप जाने कहां-कहां जा सकती है। इसलिए गलत मोहर शाखा में कतई न रखें।

तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट के आंकड़े

तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट के आंकड़े अगर सुसंगत या सही नहीं होंगे तो उसके आधार पर भरे गए निरीक्षण रिपोर्ट के आंकड़े भी गलत होंगे। पत्रों की संख्या तो डाक/प्रेषण/पत्रांक पंजी देखकर मालूम की जा सकती है। लेकिन ई-मेल, वाउचर, रजिस्टरों में प्रविष्टियों आदि की संख्या गिनकर निकालना संभव नहीं है। इसके लिए सटीक अंदाजा लगाना ही उचित है। इसका आसान फार्मूला है – दैनिक औसत x75, जिसमें 75 एक तिमाही के 90 दिनों में से कार्यदिवसों की लगभग संख्या है। उदाहरण के लिए यदि किसी शाखा में तीन अधिकारी ई-मेल भेजते हैं और तीनों रोज लगभग क्रमश: 6, 3 और 1 मेल भेजते हैं, तो शाखा द्वारा भेजे गए ई-मेल का औसत 10 हुआ। तिमाही के दौरान भेजे गए ई-मेल की संख्या 750 हुई। अर्थात हर तिमाही में लगभग इतने ही ई-मेल उस शाखा से भेजे जाते होंगे। इसी तरह से, माह के बीच के किसी दिन को स्टाफ द्वारा बनाए गए अंतरण, समाशोधन एवं कार्यकारी व्यय के जमा-नामे वाउचरों की लगभग संख्या को दैनिक औसत मानकर पूरी तिमाही में बनाए गए वाउचरों की संख्या निकाली जा सकती है।

क्या आपकी शाखा का हिंदी निरीक्षण संपन्न हो गया है?

यदि आपने निरीक्षण से पहले इस लेख में बताए गए कामों को संपन्न नहीं किया होगा तो आपको निरीक्षण के दौरान इन कामों को करने के लिए जरूर कहा गया होगा और निरीक्षण रिपोर्ट के साथ अंचल कार्यालय द्वारा भेजे गए पत्र में भी इन्हें कमियों के रूप में दर्ज किया गया होगा। इन्हें दूर करने पर ही आपकी निरीक्षण रिपोर्ट को बंद किया जाएगा। इसके लिए अधिकतम एक माह का समय निर्धारित है, इसलिए जल्द से जल्द उक्त कामों को पूरा करके निरीक्षण रिपोर्ट को बंद करने का अनुरोध अंचल कार्यालय से करें।

क्या आपकी शाखा का राजभाषायी निरीक्षण होना शेष है?

यदि आपकी शाखा का राजभाषायी निरीक्षण होना शेष है तो आप इस लेख में बताए गए कामों को आज ही संपन्न कर लें। जो भी कागजात या तस्वीरें जुटाकर रखने के लिए ऊपर कहा गया है, उनकी सॉफ्ट प्रतियों को एक फोल्डर में सुरक्षित रखें। पीडीएफ एवं तस्वीरों को ऑनलाइन रिड्यूसर सॉफ्टवेयर की मदद से कम एमबी का कर लें ताकि निरीक्षक द्वारा इनकी सॉफ्ट प्रतियों को ई-मेल या व्हाट्सएप से मांगे जाने पर आप तुरंत बिना किसी समस्या के भेज सकें। साथ ही, उन्हें प्रिंट करके हिंदी फाइल में भी रख लें ताकि ऑनलाइन निरीक्षण के समय वेबकैम पर दिखाने को कहे जाने पर दिखा भी सकें। इस तरीके से तैयारी करेंगे तो निरीक्षण के समय आपको केवल अपनी हिंदी फाइल निकालनी होगी और आपकी शाखा का ऑनलाइन हिंदी निरीक्षण केवल 15 मिनट में पूरा हो जाएगा। साथ ही, आप निरीक्षणकर्ता की प्रतिकूल टिप्पणियों से भी बच जाएंगे। याद रखें, बाहरी निरीक्षणकर्ताओं द्वारा देश के किसी भी भाग की एक छोटी सी ग्रामीण बैंक शाखा की निरीक्षण रिपोर्ट भी सीधे बैंक के उच्च प्रबंधन को भेजी जाती है। उसके संबंध में कोई भी पत्राचार प्रधान कार्यालय एवं अंचल कार्यालय के माध्यम से ही शाखा को प्राप्त होता है। इसलिए राजभाषायी निरीक्षण को हल्के में लेने की भूल न करें, बल्कि इसे एक सुनहरे अवसर के रूप में लें और इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने का प्रयास करें। अ

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है,
असंभव से भी आगे निकल जाना।
स्वामी विवेकानंद

भाग्यलक्ष्मी मुग्गे
अधिकारी (सेवानिवृत्त)
मल्लेश्वर, बेंगलुरु

लेखिका परिचय: कवियत्री भाग्यलक्ष्मी मुग्गे का जन्म 10 जून 1949 को हसन जिले के पेरियामेज में हुआ था।
वे यूको बैंक से सेवानिवृत्त हुई हैं और कन्नड साहित्य में उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है| "वसंतघंटमना" उनका पहला कविता संग्रह है। उन्होंने पारंपरिक गीत गाने , नाटक का निर्देशन करने , कविता लेखन आदि के लिए कर्नाटक राज्य का **"प्रेमकवई"** पुरस्कार जीता है।

ಉಳಿಸಬೇಕಿದೆ ಕನ್ನಡತನ
(कन्नड भाषा को सुरक्षित करें)

ನಾವು ಕನ್ನಡಿಗರು. ಇದು ನಮಗೆ ಸದಾ ಕಾಲವೂ ಗಮನದಲ್ಲಿದ್ದು ಅದನ್ನು ಗರ್ವದಿಂದ ಅನುಭವಿಸಿ ಇತರರಿಗೂ ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದೇ ನಮ್ಮ ಕನ್ನಡತನದ ಸ್ಂಕೇತ. ಹೆಸರಿಗೆ ಕನ್ನಡಿಗರು. ಮಾತಾಡುವುದು ಆಂಗ್ಲಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ. ಕೆಲವೊಮ್ಮ ತಮಿಳು, ತೆಲುಗು, ಹಿಂದಿ ಅಥವಾ ಇನ್ನೇನಾದರೂ ಭಾಶೆಯಲ್ಲಿ, ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇಲ್ಲದೆ ಇರುವಾಗಲೂ ಪರಭಾಷಾ ವ್ಯಾಮೋಹ ನಮ್ಮನ್ನು ಸೆಳೆಯುತ್ತಲೇ ಇರುತ್ತದೆ. ಏಕ್ ಹೀಗೆ ? ಇದನ್ನು ನಮಗೆ ನಾವೇ ಪ್ರಶ್ನಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಈ ಮೂರ್ಖ ತನದಿಂದ ಎಚ್ಚೆತ್ತುಕೊಂಡು ನಮ್ಮ ಭಾಷಾ ಪ್ರೇಮವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸಬೇಕು. ನಾವೇ ನಮ್ಮ ಭಾಷೆಯನ್ನಿ ಕಡೆಗಣಿಸಿದರೆ ಮಾನ್ಯ ಮಾಡುವರಾರು? ನೀವೇ ಯೋಚಿಸಿ.

ನವೆಂಬರ್ ತಿಂಗಳು ಬಂದಾಗ ಅಥವಾ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳನಗಳ್ಯ್ ಆದಾಗ ಮಾತ್ರ ಕನ್ನಡ ಕನ್ನಡ ಎಂದು ಕುಣಿದು ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೊಂಡು ರಜೆ, ಭತ್ಯೆ ಎಲ್ಲ ಸೌಲಭ್ಯಗಳನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡು ನಂತರ ಸಲೀಸಾಗಿ ಮರತು ಬಿಡುವುದು ಕನ್ನಡತನವೇ ? ಕನ್ನಡ ರಾಜ್ಯೋತ್ಸವ ದಿನದಿನವೂ ನಡೆಯ ಬೇಕಾದ ನಿತ್ಯೋತ್ಸವ. ಅದಕ್ಕೆ ನಾವು ನಡೆಸವೇಕು ನಮ್ಮ ನುಡಿಸೇವೆ. ಕನ್ನಡ ಉಳಿದರೆ ತಾನೇ ಕನ್ನಡನಾಡು ಬಲವಾಗುವುದು. ಕನ್ನಡ ರಾಜರಾಜೇಶ್ವರಿ ನಲಿನಲಿದಾಡುವುದು?

ಈ ೮೧ ನೇ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಶುಭ ಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ನಾವೆಲ್ಲರು ಶಪಥ ಮಾಡೋಣ "ನಾವಿ ಕನ್ನಡ ದಿನ ಪತ್ರಿಕೆಯನ್ನೇ ಓದುತ್ತೇವೆ. ಕನ್ನಡ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನ್ಯ, ವಾರ, ಪಾಕ್ಷಿಕ, ಮಾಸ ಪತ್ರಿಕೆಗಳನ್ನು ಕೊಂಡು ಓದುತ್ತೇವೆ.

ಕನ್ನಡವನ್ನು ನಮ್ಮ ನಡೆ, ನುಡಿ, ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ ಶೇಕಡ ನೂರಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಬಳಸುತ್ತೇವೆ ಎಂದು. ಹೀಗಾದಾಗ ಮಾತ್ರ ಕನ್ನಡ ಉಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯ. ಈಗೀಗ ಹಲವಾರು ದಿನ, ವಾರ, ಮಾಸ ಪತ್ರಿಕೆಗಳು ಬಹಳ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬರುತ್ತಿವೆ. ಕಾಲದಿಂದಲೂ ನಡೆದು ಬರುತ್ತಿರುವ ಸುಧಾ, ತರಂಗ, ಕಸ್ತೂರಿ, ಮಯೂರ, ತುಷಾರ, ಕರ್ಮವೀರ ಪತ್ರಿಕೆಗಳ ಸೊಗಸು ನಿಮಗೆ ತಿಳಿದೇ ಇದೆ.

ಮುದ್ದಾದ ಮುಖಪುಟ, ವಿಷಯ ಸಂಗ್ರಹಣೆ, ವಿಚಾರವಂತಿಕೆ, ಪ್ರತಿಭಾ ಶೋಧ, ಉತ್ತಮ ಸಂಪಾದಕೀಯ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಒಳಗೊಂಡು ನವನವೀನವಾಗಿ ಸೊಗಸಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬರುತ್ತಿವೆ. ಹೀಗಿದ್ದಾಗ್ಯೂ ನಾವಿ ಆಂಗ್ಲ ಭಾಷೆಯ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನೇ ನಿಯತಕಾಲಿಕಗಳನ್ನೇ ಓದುತ್ತೇವೆ ಎಂಬ ಹಟ ಸರಿಯೇ ?

ಪರಭಾಷಾ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಓದಬಾರದೆಂಬ ಅನಿಸಿಕೆ ನನ್ನದಲ್ಲ. ಯಾವ ಭಾಷೆಯ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನಾದರೂ ಓದಿರಿ.

ಜ್ಞಾನಾರ್ಜನೆಗೆ ಭಾಷೆ ಗಡಿಯಲ್ಲ.

ಆದರೆ ಕನ್ನಡವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅನ್ಯ ಭಾಷೆಗೆ ಮಾರು ಹೋಗುವುದನ್ನು ದಯವಿಟ್ಟು ಬಿಡಿ. "ಸ್ವಧರ್ಮೇ ನಿಧನಂ ಶ್ರೇಯ: ಪರಧರ್ಮೋ ಭಯಾವಹ:" ಎಂಬ ಗೀತಾಚಾರ್ಯ ಶ್ರೀ ಕ್ರಿಷ್ಣ ನ ನುಡಿಗೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾರ್ಪಾಟು ಮಾಡಿ ಸ್ವಭಾ

ಸ್ವಭಾಷಾ ಪರಮ ಶ್ರೇಯ: ಪರಭಾಷಾ ಕಲ್ಪಿತ ವ್ಯಾಮೋಹ:" ಎಂದು ನಾವು ಪರಿಗಣಿಸಿದರೆ ಸಾಕು. ನಮ್ಮ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ನಾವೇ ಉಪೇಕ್ಷೆ ಮಾಡಿದರೆ ಬೇರೆಯವರು ಒತಾಸೆ ಕೊಡುತ್ತಾರೆಯೇ ? ಹಾಗೇ ಅಲ್ಲವೆ ಈ ಕನ್ನಡ ಬೆಳೆಸುವ ಕಾಯಕವೂ ಕೂಡ.

ನಮ್ಮ ಸುತ್ತ ಮುತ್ತಲ ರಾಜ್ಯಗಳಿಗೆ ಭೇಟಿ ಇತ್ತಗ ಅಲ್ಲಿಯ ಜನರ ಭಾಷಾ ವ್ಯಾಮೋಹವನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪ ಗಮನಿಸಿ. ಅವರ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಭಾಷೆಗಳನ್ನು ಅವರಿಗೆ ತಿಳಿದಿದ್ದರೂ ಆಡುವುದೇ ಇಲ್ಲ. ಅವರ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಭಾಷೆಗಳನ್ನು ಅವರಿಗೆ ತಿಳಿದಿದ್ದರೂ ಆಡುವುದೇ ಇಲ್ಲ. ಅವರ ಭಾಷೆಯಲ್ಲೇ ನಮಗೆ ತಿಳಿಸಲು ಹೆಣಗುತ್ತಾರೆ. ನಾವಾದರೂ ಯಾರು ಯಾವ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡಿಸಿದರೂ ಸರಿ ನಾವೇ ಅವರ ಭಾಷೆಗೆ ತಕ್ಷಣ ನೆಗೆದು ಬಿಡುತ್ತೇವೆ.ಇದು ನಮ್ಮ ಕನ್ನಡಿಗರ ಒಂದು ಸಾಂಕ್ರಮಿಕ ರೋಗವೆಂದೇ ನನಗನ್ನಿಸುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಮುಕ್ತಿ ಪಡೆಯದೆ ನಮ್ಮ ಕಸ್ತೂರಿ ಕನ್ನಡ ಬೆಳೆಯಲು ಉಳಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.ಈ ದಿಸೆಯಲ್ಲಿ ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಕಂಕಣ ಬದ್ಧರಾಗಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲೇ ನುಡಿಯುತ್ತಾ ಕನ್ನಡದಲ್ಲೇ ವ್ಯವಹರಿಸುವ ವ್ರತ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ.

ಇನ್ನು ನಮ್ಮ ಮುಂದಿನ ಪ್ರಜೆಗಳಾದ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕನ್ನಡ ಕಂದಗಳಾಗಿ ಬೆಳೆಸುವ ಹೊಣೆ ನಮ್ಮದೇ ತಾನೆ ? ಮಕ್ಕಳು ಹುಟ್ಟಿದಾಗಲೇ ಆಂಗ್ಲ ಶಾಲೆಗೆ ಸೇರಿಸಲು ಸ್ಥಳ ಕಾದಿರಿಸುತ್ತರೆ ಪೋಷಕರು. ಇದೊಂದು ಬಗೆ ಹರಿಯದ ಸಮಸ್ಯೆಯೇ ಆಗಿಬಿಟ್ಟಿದೆ. ಎಲ್ಲಾ ಮೇಧಾವಿಗಳೂ ವೇದಿಕೆಯ ಮೇಲೆ ಕನ್ನಡ ಮಾಧ್ಯಮದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಥಮಿಕ, ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಮತ್ತು ಪ್ರೌಢ ಶಿಕ್ಷಣವೂ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬ ಧ್ವನಿವರ್ಧಕ ಕಿತ್ತು ಹೋಗುವಂತೆ ಅರಚುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಅವರ ಮಕ್ಕಳು ಮೊಮ್ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಆಂಗ್ಲ ಮಾಧ್ಯಮದ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯೇ ಪಠ್ಯ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಶಾಲೆಗಳಿಗೆ ಭರ್ತಿ ಮಾಡಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಇದಕ್ಕೆ ಏನು ಹೇಳಬೇಕು ? ಆತ್ಮ ವಂಚನೆಯಲ್ಲವೆ ? ಸರ್ಕಾರಿ ಶಾಲೆಗಳು ಮಕ್ಕಳೇ ಇಲ್ಲದೆ ಮುಚ್ಚಿ ಹೋಗುತ್ತಿವೆ. ಆಂಗ್ಲ ಶಾಲೆಗಳು ನಾಯೊಕೊಡೆಗಳಂತೆ ತಲೆ ಎತ್ತುತ್ತಿವೆ. ಈ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸುವವರಾರು. ಸರ್ಕಾರ ಈ ದಿಸೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಮಾಕಣಿವಾದ ಕಠಿಣವಾದ ಕ್ರಮ ಕೈಗೊಳ್ಳಗೇಕು. ಕನ್ನಡ ಪರ ಸಂಘಟನೆಗಳು, ಕವಿಗಳು ಸಾಹಿತಿಗಳು ಎಷ್ಟೇ ಹೋರಾಟ ಮಾಡಿದರೂ ಕನ್ನಡ ಏಳಿಗೆ ಕುಂಠಿತವಾಗಿಯೇ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವುದು ಸರ್ಕಾರದ ಧೋರಣೆಯಿಂದಲೇ ಎಂಬುದನ್ನು ಒತ್ತಿ ಹೇಳಬೇಕಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ಮಾನ್ಯತೆಗಳಿಸಲು ಇಷ್ಟು ಹೋರಟವೇ ? ಇದೊಂದು ವಿಪರ್ಯಾಸವೇ ಸರಿ.

ನಾವು ಭಾರತೀಯರಾಗುವುದಕ್ಕೂ ಮೊದಲು ಕನ್ನಡಿಗರು. ಕನ್ನಡ ಉಳಿಸಿಕೊಂಡರಷ್ಟೇ ಭಾರತೀಯತೆ ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಲ್ಲೆವು ಎಂಬುದನ್ನು ಎಲ್ಲರರೂ ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಒಬ್ಬೊಬ್ಬರೂ ತಮ್ಮಷ್ಟಕ್ಕೆ ತಾವು ಕನ್ನಡತನ ಬೆಳೆಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಸಮಯ ಬಂದಾಗಲಲ್ಲಾ ಪ್ರದಶ್ರಿಸಬೇಕು. ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಸುಪ್ತವಾಗಿರುವ ಕನ್ನಡ ಕೆಚ್ಚು ಜಾಗ್ರುತವಾಗಬೇಕು. ನಮ್ಮ ಒಣ ಪ್ರತಿಷ್ಟೆ, ಆರ್ಥಿಕ ಲಾಭ, ವ್ಯಕ್ತಿಗತ ಸುಖಗಳನ್ನು ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿ, ಸ್ವಾಭಿಮಾನ ಸ್ವಾವಲಂಬನೆ, ನಾಡ ಪ್ರೇಮದ ಸೆಲೆಯನ್ನು ಉತ್ತೇಜಿಸಬೇಕು. ಕನ್ನಡ ಭುವನೇಶ್ವರಿಯ ಶುಭಾಶಿರ್ವಾದದಿಂದ ನಮ್ಮ ಕನಸುಗಳು ನನಸಾಗಲಿ ಎಂದು ಹಾರೈಸುತ್ತೇನೆ. ಜೈ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ. अ

लेख का सार

आज हमारी मातृभाषा के प्रति हमारी उपेक्षा के कारण भाषा के लुप्त होने का खतरा पैदा हो रहा है| हम “ कन्नडिगा” कहलाते हैं परंतु आज की पीढ़ी अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप करती है एवं आर्थिक लाभ के लिए केवल उसे सीख रही है । अभिभावकों की ज़िम्मेदारी है कि अपने बच्चों को मातृभाषा के प्रति भी जागरूक बनाएँ और कोई एक कन्नड भाषा की दैनिक पत्रिका अवश्य अपने घर में मंगायें और पढ़ने की आदत डालें । इस भाषा के प्रति हमारी निष्ठा केवल नवंबर के महीने में राज्योत्सव तक सीमित न रखकर हमारी यह कोशिश रहे कि अन्य भाषाओं के साथ इसे हम पूर्ण प्राथमिकता दें एवं अपने समृद्ध साहित्य का अध्ययन करें ।

इतिश्री मुर्मु

अधिकारी
अंचल कार्यालय, रांची

खेरवाल उपरूम – सच्चे खेरवाल की पहचान (रक्षक)

खेरवाल आप गहरे समुद्र के प्राणी हैं। सृष्टि के निर्माण के समय से ही इसकी रक्षा हेतु आप जी रहे हैं। आप एक सच्चे खेरवाल (रक्षक) हैं। आपका हृदय आईने की तरह साफ है। आप संस्कृति और भाषा के रक्षक हैं। आप बहती नदी की तरह शुद्ध और खिलते फूल की तरह सुंदर हैं। अपने आप को शिक्षित करते हुए आप अपने होश खो चुके हैं। एकता के अभाव में आप बिखर गए हैं। डरे नहीं, आप वही पुराने खेरवाल (रक्षक) हैं। अपने आप में झांककर देखें, आप खुद में एक सच्चे सिडो-कानहो, चाँद-भारो को देखेंगे। भीड़ में खुद को गुम न होने दें अन्यथा दूसरे हजारों की तरह आप भी इस दुनिया से विलुप्त हो जाएंगे। एक दिन यह शरीर मिट्टी में मिल जाएगा, याद करें आप पुराने रक्षकों में सर्वश्रेष्ठ हैं। आपका कर्तव्य है कि अपनी वास्तविक पहचान को जीवित रखने के लिए संघर्ष करते रहें।

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

ओलचिकी लिपि – संक्षिप्त परिचय

ओलचिकी (OLCHIKI) एक भारतीय लिपि है, जो **संथाली** भाषा लिखने में प्रयुक्त होती है। इस भाषा का संबंध विशेष रूप से **झारखंड** राज्य से है। **श्री रघुनाथ मुर्मू** ने वर्ष **1925** में ओलचिकी लिपि का विकास किया था । इस लिपि को अप्रैल, 2008 में यूनिकोड में शामिल किया गया था । ओलचिकी का शाब्दिक अर्थ –**'ओल'**का अर्थ**'लिखना'** एवं **'चिकी'**का अर्थ**'लिपि'** होता है अर्थात **'लिखने के लिए लिपि'** ।

रंग बरंगे फुल्ल

वनीत कुमार थापा
प्रबंधक
हुसैनपुर शाखा – (2928)

रंग बरंगे फुल्ल आं अस
इक्कै स्हाडी जननी ऐ
असें बी अज्ज इक बनिऐ
मत भेदै दी कन्द भननी ऐ ...

अस आज़ाद देसै दे बच्चे
कुसे कोला नेईं डरना ऐ
अग्गे अग्गे गें बढ़ाइए
बुराइएं दा एंत कर ऐ ...

बापू गाँधी दी बत्ता चलिए
देसा दा भाविक्ख बनाना ऐ
अस अज्ज दे गिल्लू आं
कल नेता असें खोआना ऐ ...

आओ सारे हिलीमिली जाचै
अपनी जान देसै पर लाचै
उजड़दे इस चमने गी
मुड़िए "सुन्ने दी चिड़ि" बनाचै ...

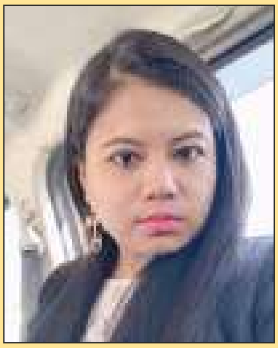

एम. उमा देवी

अधिकारी
लैमलॉंग शाखा, मणिपुर

यह आलेख "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" विषय पर आधारित है। इस आलेख के माध्यम से यह बताया गया है कि मणिपुर की बेटियों को बेटों की तरह ही समान आधिकार और दायित्व दिए जाते हैं। जब मणिपुर में राजतंत्र था, तभी से ही मणिपुर की बेटियों को राजनीति, युद्ध एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल किया जाता रहा है। लेकिन जैसे- जैसे हम विकास कर रहें हैं महिलाओं के विरूद्ध अपराध भी बढ़ रहा है। महिलाओं की सुरक्षा एवं देख-रेख महिलाओं के ही हाथ में है जिसमें माताओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बेटियों को मजबूत और स्वतंत्र बनाना चाहिए। मणिपुर में महिला सशक्तिकरण कोई नई बात नहीं है बल्कि यह एक उभरती क्रांति है।

ইচানুপী কনবিয় ইচানুপী তম্বিয়

[illegible]

[illegible]

मणिपुरी भाषा बांग्ला एवं मणिपुरी लिपि में लिखी जाती है। उपर्युक्त लेख बांग्ला लिपि में है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“राजभाषा भारती” संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका है, जिसे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका का प्रथम अंक अप्रैल, 1978 में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रथम सचिव **श्री रमाप्रसन्न नायक** के कार्यकाल तथा **श्री राजमणि तिवारी** के संपादन में प्रकाशित हुआ था। यह पत्रिका न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन संपूर्ण संघ सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/कार्यालयों आदि में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है।

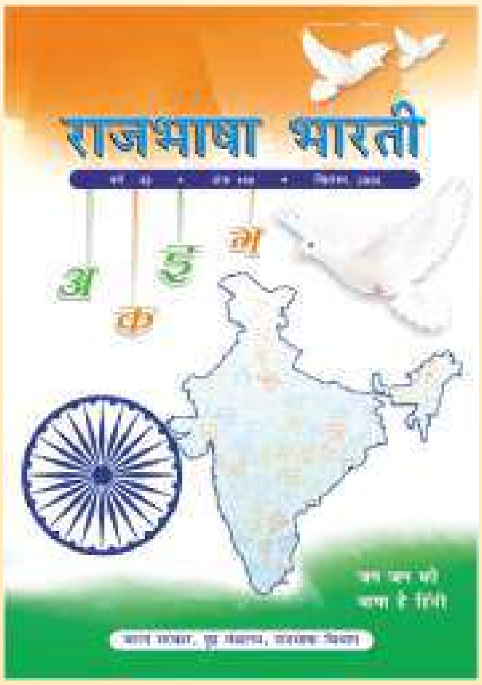

सभी यूकोजनों से अनुरोध है कि आप सभी “राजभाषा भारती” में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित आलेख को अवश्य पढ़ें जिससे आप अपना ज्ञानार्जन कर सकें तथा इस पत्रिका में बैंकिंग, वित्त, आर्थिक एवं अन्य संबंधित विषयों पर अपने आलेख भी भेजें।आप अपने आलेख यूनिकोड हिंदी में टाइप कर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को ई-मेल के माध्यम से भेजें।

गतिविधियां

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व

कोरोना वायरस महामारी के कारण पूरे देश में करीब 67 दिनों तक लॉकडाउन था जिसके कारण कई गरीब परिवार असहाय हो गए। इस संकट की घड़ी में कई संस्थाओं/व्यक्तियों ने आगे आकर इन गरीबों की मदद की। यूको बैंक द्वारा भी ऐसा ही एक सराहनीय कदम उठाया गया। यूको बैंक के प्रधान कार्यालय द्वारा **05.05.2020** को करीब **250** से अधिक लोगों को राशन सामग्री का वितरण किया गया जिसकी कुछ तस्वीरें आपके समक्ष प्रस्तुत हैं:

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा
जे बी अस्पताल, भोपाल को 250 पीपीई किट दान स्वरूप दिया गया।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, इंदौर द्वारा इंदौर नगर निगम
को 100 पीपीई किट दान स्वरूप दिया गया।

मेगा एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम

यूको बैंक, प्रधान कार्यालय ने एक नई पहल करते हुए दिनांक 20.05.2020 को "मेगा एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम" के तहत वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के मुख्य वक्ता के रूप में हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अतुल कुमार गोयल** थे। इस वेबिनार में सहभागिता करने हेतु 20000 से अधिक लोगों ने अपना पंजीकरण कराया। इस वेबिनार का उद्देश्य एमएसएमई उद्यमियों को संकट की इस घड़ी में एक अनोखे मंच के माध्यम से एमएसएमई के उत्थान के लिए बैंक द्वारा उठाए गए कदम के बारे में जानकारी प्रदान करना था। लोगों ने यूको बैंक की इस अनोखी पहल की सराहना की। वेबिनार के दौरान की कुछ तस्वीरें आपके समक्ष प्रस्तुत है:

निर्यातकों के लिए यूको बैंक द्वारा वेबीनार का आयोजन

यूको बैंक,प्रधान कार्यालय ने एक नई पहल करते हुए दिनांक 15.06.2020 को निर्यातकों के लिए "सरकारी योजनाओं व वित्तीय सहायता तथा उनके आर्थिक प्रभाव" विषय पर वेबीनार का आयोजन किया। वेबीनार के मुख्य वक्ता हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अतुल कुमार गोयल** तथा कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** थे। इस वेबीनार में सहभागिता हेतु 500 से अधिक लोगों ने पंजीकरण कराया था। उक्त वेबीनार द्वारा कोरोना संकट की घड़ी में एक डिजिटल मंच के माध्यम से निर्यातकों के उत्थान तथा उनकी समस्याओं के समाधान के लिए बैंक द्वारा उठाए गए कदम के बारें में जानकारी दी गई तथा उनकी अन्य समस्याओं का भी समाधान किया गया। उद्यमियों ने यूको बैंक की इस अनोखी पहल की काफी सराहना की। वेबीनार के दौरान की कुछ तस्वीरें आपके समक्ष प्रस्तुत हैं:

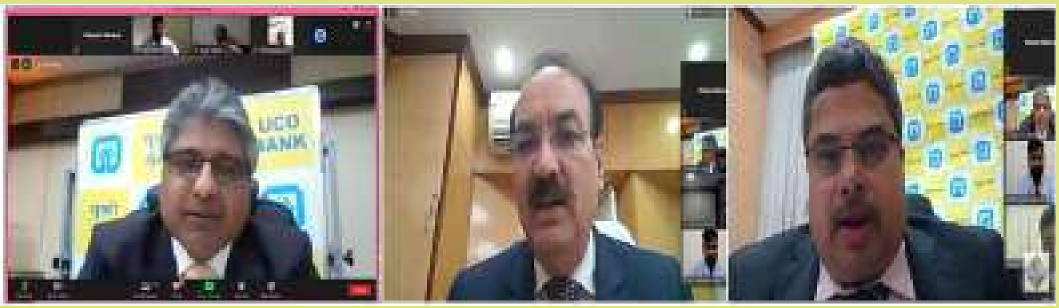

वेबिनार के दौरान उद्यमियों से रूबरू होते हुए हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल तथा कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास एवं साथ में हैं श्री वी शंकर नारायणन महाप्रबंधक, अंतरराष्ट्रीय विभाग

नराकास (बैंक), कोलकाता की छमाही बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता (संयोजक -यूको बैंक) की वेब माध्यम से 69 वीं छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन 26 अगस्त, 2020 को किया गया । बैठक की अध्यक्षता **श्री अतुल कुमार गोयल,** अध्यक्ष नराकास (बैंक), कोलकाता तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, यूको बैंक ने की

यूको बैंक ने बीमा के क्षेत्र में चार नए भागीदारों के साथ हाथ मिलाया

श्री निधु सक्सेना, महाप्रबंधक, रिटेल बैंकिंग एवं एमएसएमई विभाग यूको बैंक की तरफ से दिनांक – 20.06.2020 को अपने चार नए बीमा भागीदारों यथा जीवन, सामान्य तथा स्वास्थ्य क्षेत्र के साथ करार निष्पादित करते हुए :-

(1)जीवन बीमा हेतु एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस कंपनी,

(2)सामान्य बीमा हेतु ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी

(3 एवं 4)स्वास्थ्य बीमा के लिए रेलिगेयर हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी और स्टार हेल्थ एवं एलाइड इंश्योरेंस कंपनी

राजभाषा कार्यान्वयन : अपेक्षाएं एवं अनुपालन विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन

प्रधान कार्यालय द्वारा दिनांक 21.07.2020 को **"राजभाषा कार्यान्वयन : अपेक्षाएं एवं अनुपालन"** विषय पर माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से एक वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में **श्री जितेंदर मोहन,** अनुसंधान अधिकारी (सेवानिवृत), राजभाषा विभाग, भारत सरकार उपस्थित थे। श्री मोहन ने राजभाषा कार्यान्वयन में राजभाषा विभाग, भारत सरकार की अपेक्षाओं पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही उन्होंने राजभाषा विभाग, भारत सरकार को प्रस्तुत की जानेवाली तिमाही प्रगति रिपोर्ट में प्रविष्ट किए गए आंकड़ों की तर्कसंगता पर भी व्यापक चर्चा की तथा राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा दिए जानेवाले राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार की सभी मदों पर विस्तृत रूप से एवं बड़े ही सरल ढंग से चर्चा की और उनकी बारीकियों से भी अवगत कराया। श्री मोहन द्वारा चर्चा किए गए सभी मुद्दों से राजभाषा अधिकारियों के ज्ञान में वृद्धि हुई एवं शंकाएं दूर हुईं। इस संगोष्ठी में बैंक के सभी अंचल कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता **श्री नरेश कुमार** महाप्रबंधक—मासंप्र, कासे, प्रशिक्षण एवं राजभाषा ने की तथा संचालन **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा ने किया।

नराकास (बैंक), कोलकाता द्वारा 'संकट, नेतृत्व और सफलता' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता द्वारा दिनांक 12.08.2020 को **'संकट, नेतृत्व और सफलता'** विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में परम विशिष्ट सेवा पदक, अति विशिष्ट सेवा पदक, वायु सेना पदक से सम्मानित **श्री अरुप राहा, पूर्व एयर चीफ मार्शल, भारतीय वायु सेना** उपस्थित थे। वेब-संगोष्ठी की अध्यक्षता नराकास (बैंक), कोलकाता के अध्यक्ष तथा यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अतुल कुमार गोयल** ने की।

प्रधान कार्यालय में 74 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी सभी महाप्रबधंकगण एवं अन्य अधिकारीगण के साथ झंडोत्तोलन करते हुए

इसी दिन हमारे प्रिय कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** जी का जन्मदिन भी है। इस अवसर पर केक काटकर उनका जन्मदिन भी मनाया गया एवं एमडी सर ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर उन्हें जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस उत्सव– 2020

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरुप हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिनांक 14 सितंबर, 2020 को **अखिल भारतीय "भारतीय भाषा सौहार्द उत्सव - 2020"** का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अतुल कुमार गोयल** ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में **प्रो. शंभुनाथ**, निदेशक, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि के रुप में **श्री निर्मल कुमार दुबे**, कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वियन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता थे। कार्यक्रम में बैंक के कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास,** प्रधान कार्यालय के अन्य कार्यपालकगण के अलावा सभी अंचलों के अंचल प्रमुख, उप अंचल प्रमुख सहित उनके राजभाषा अधिकारी भी जुड़ें। इस अवसर पर श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने बैंक की वेबसाइट प्रथम स्टेप में ही हिंदी में खुलने का लोकार्पण किया। इसके अतिरिक्त बैंक द्वारा शुरु किए गए **यूको राजा राममोहन राय भाषा-सेतु सम्मान से प्रो. शंभुनाथ,** निदेशक, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता को सम्मानित किया गया ।

प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन : नई चुनौतियां, नई दिशाएं विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुसरण में राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा दिनांक 26.08.2020 को **'राजभाषा कार्यान्वयन: नई चुनौतियाँ, नई दिशाएँ'** विषय पर राष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस वेब-संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रुप में **श्री संदीप आर्य,** निदेशक (तकनीकी एवं कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा **श्री निर्मल कुमार दुबे**, सहायक निदेशक एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता उपस्थित थे। इस वेब-संगोष्ठी में पूरे देश भर से बैंक के सभी 42 अंचलों एवं सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता **श्री नरेश कुमार**, महाप्रबंधक (मासंप्र, कासेवि, प्रशिक्षण एवं राजभाषा) ने की एवं कार्यक्रम का संचालन **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक- राजभाषा ने किया

अंचल कार्यालयों में भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस समारोह

बेंगलुरु

पटना

चेन्नई

नागपुर

हरियाणा

बालेश्वर

एर्णाकुलम

अगरतला

रायपुर

जयपुर

नई दिल्ली

वाराणसी

सूरत

जोधपुर

कानपुर

अहमदाबाद

लखनऊ

अजमेर

'राजभाषा कार्यान्वयन: कार्यपालकों की भूमिका' विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुसरण में राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा दिनांक 24.09.2020 को अंचलों के उप अंचल प्रमुखों तथा प्रशिक्षण केन्द्रों के उप प्राचार्यों के लिए **'राजभाषा कार्यान्वयन: कार्यपालकों की भूमिका'** विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य संकाय के रूप में श्री के पी शर्मा, उप निदेशक, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय- I, नई दिल्ली तथा प्रभारी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित थे। इस ऑनलाइन कार्यशाला में पूरे देश भर से बैंक के सभी 42 उप अंचल प्रमुखों तथा सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता एवं 07 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों के प्राचार्यों/उप प्राचार्यों ने सहभागिता की। इनके अतिरिक्त बैंक के कुल 49 राजभाषा अधिकारियों ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन **श्री अजय व्यास,** कार्यपालक निदेशक ने किया तथा कार्यशाला की अध्यक्षता **श्री नरेश कुमार**, महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन, कार्मिक सेवा, प्रशिक्षण एवं राजभाषा ने की। **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी, राजभाषा विभाग,प्रधान कार्यालय द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

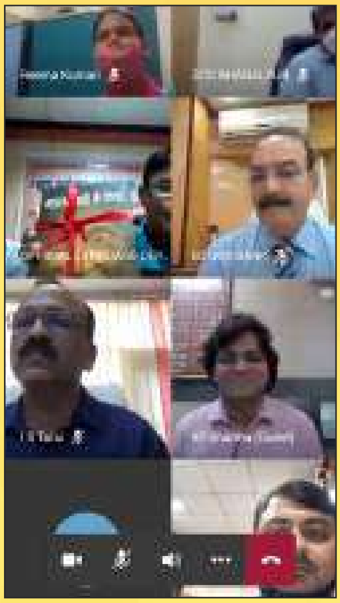

आइए ! जाने भारतीय साहित्यकार को
“नागार्जुन, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'” - हिंदी एवं मैथिली साहित्यकार

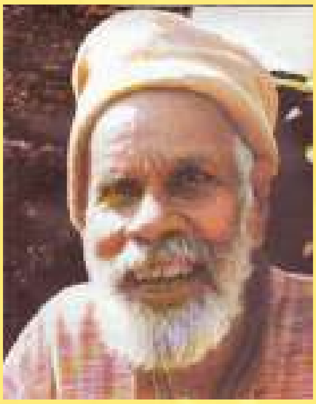

जन्म -30 जून, 1911 **मृत्यु -05 नवंबर, 1998**

नागार्जुन' का जन्म 30 जून, 1911 को वर्तमान मधुबनी जिला के सतलखा गाँव में हुआ था। दरभंगा जिला का तरौनी गाँव उनका पैतृक गाँव था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। वे हिंदी और मैथिली के उत्कृष्ट लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार 'नागार्जुन'ने हिंदी के अतिरिक्त मैथिली,संस्कृत एवं बांग्ला में मौलिक रचनाएं की तथा संस्कृत, मैथिली एवं बांग्ला से अनुवाद भी किया।

'नागार्जुन' का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिंदी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएं की। काशी में रहते हुए उन्होंने 'वैदेह' उपनाम से भी कविताएं लिखी थी।

नागार्जुन की पहली प्रकाशित रचना एक मैथिली कविता थी जो 1929 में लहेरियासराय, दरभंगा से प्रकाशित 'मिथिला' नामक पत्रिका में छपी थी। इसके अलावा उनकी पहली हिंदी रचना 'राम के प्रति' नामक कविता थी जो 1934 ई. में लाहौर से निकलने वाले साप्ताहिक 'विश्वबंधु ' में छपी थी।

इनकी प्रमुख कृतियां हैं:- कविता –अकाल और उसके बाद, युगधारा, प्यासी पथराई, सतरंगे पंखों वाली आदि।
उपन्यास– रतिनाथ की चाची, बलचनामा, नई पौध, वरुण के बेटे, दुखमोचन, उग्रतारा आदि।
संस्मरण– एक व्यक्ति-एक युग; कहानी -आसमान में चंदा तैरे;
बाल साहित्य -कथा मंजरी भाग 1, कथा मंजरी भाग 2 आदि।
मैथिली रचनाएं -पारो (उपन्यास); पत्रहीन नग्न गाछ, चित्रा, (कविता-संग्रह); बांग्ला रचनाएं -मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा आदि।

इन्हें मैथिली कविता संग्रह “पत्रहीन नग्न गाछ” के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अकाल और उसके बाद

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर, छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी, हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर, कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आंगन से ऊपर, कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें, कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पांखें, कई दिनों के बाद

पत्रहीन नग्न गाछ

पत्रहीन नग्न गाछ
लगइए कारी बस कारी, ठुठाकृति
अन्हार गुज्ज राति में
स्पंदनहीन, रक्ष, तक्षक शिशिर
पसरल अछि सबतरि दूबिक मोलाएम नवांकुर
बांटि रहल रोमांचक– टटका प्रसाद सउंसे शरीर के
मोन होइए, गाबी अंहरिओ में वसंतक आगमनि
आउ हे ऋतुराज,
नुकाएल छी कालक कोखि में अनेरे।
दिअउ निश्चल आशीर्वाद
तकइए अहींक बाट घासक पेंपी
आउ हे ऋतुराज

पाठकीय

भारत सरकार

Govt. of India

[illegible]

यूनियन बैंक Union Bank

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

[illegible]

यूको बैंक UCO BANK

सम्मान आपके विश्वास का Honours your trust

अंचल कार्यालय , एरणाकुलम

UCOZOEKM/2020-21/12 20.01.2021

संपादक ,
अनुगूंज,
राजभाषा विभाग ,प्रधान कार्यालय,
कोलकाता

महोदय,

विषय :- यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका – "अनुगूंज"

राजभाषा विभाग , प्रधान कार्यालय द्वारा प्रकाशित यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका अनुगूँज के वर्ष 10 अंक- 1 अप्रैल - सितंबर 2019 और अंक -2 अक्तूबर,2019 - मार्च 2020 की प्राप्ति हुई । दोनों अंक पठनीय एवं ज्ञानवर्धक उत्कृष्ट रचनाओं का एक सुन्दर संकलन हैं ।

विशेष रूप से बैंक के संस्थापक स्व.जी। डी। बिड़ला स्मृति विशेषांक के आमुख लेख आकर्षणीय था। पत्रिका के द्वोनों अंक के कार्यपालक विमर्श खण्ड बहुत ही रोचक और सरगर्भित है।

पत्रिका में मुख्य आकर्षण भाषा सौहार्द खण्ड था । बंगला , पंजाबी, मराठी,तमिल, असमिया , गुजराती ,मलयालम , ओडिया जैसे भारतीय भाषाओं में लेख प्रस्तुतीकरण करके यह पत्रिका भाषा सोहार्द पत्रिका की भूमिका निभाया है , यह अत्यंत सराहनीय प्रयास है ।

कहानी , कविता,बैंकिंग लेख , भोजनम् संबंधित विभिन्न लेखों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है । राजभाषा क्षेत्र से संबंधित प्रमुख कार्यों का संकलन तथा विविध चित्र चयन अति प्रशंसनीय है। यह पत्रिका हिंदी के रचनात्मक प्रचार - प्रसार में अपनी सफल भूमिका का निर्वाह करने में सफल होगी।

आशा करते है कि आगामी अंक भी इसी प्रकार संग्रहणीय होगा । पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल तथा रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

भवदीय,

रविकुमार

के रविकुमार
अंचल प्रबंधक , एरणाकुलम

यूकोबैंक, अंचलकार्यालय, 39/3720 एफ, एस.आर.कोम्पलक्स, रविपुरमरोड, एरणाकुलम, केरला - 682 016
UCO Bank, Zonal Office, 39/3720 F, S.R. Complex, Ravipuram Road, Ernakulam, Kerala - 682 016
Phone: 0484 2788610 E-mail: zo.tvpuram@ucobank.co.in

रंग बिरंगा सुगंधित गुलदस्ता

यूको बैंक की हिंदी पत्रिका अनुगूंज का अक्टूबर, 2019 - मार्च, 2020 अंक सहर्ष प्राप्त हुआ। धन्यवाद! यह यूको बैंक का छमाही प्रकाशन है। इसके साथ ही यूको बैंक यूको टावर का भी प्रकाशन करता है जो तिमाही आधार पर प्रकाशित की जाती है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता के संयोजक के रूप में यूको बैंक छमाही आधार पर 'नगर प्रभा' का प्रकाशन भी करता है। इस प्रकार यूको बैंक राजभाषा के प्रचार प्रसार में अनेक तरीकों से योगदान करता है।

फिलहाल मैं 'अनुगूँज' के भाषा राजभाषा अंक पर अपने विचार संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं। गृह पत्रिका का नया अंक 52 पृष्ठों का है। प्रारंभिक काल में यूको टावर केवल 24 पृष्ठों की गृह पत्रिका होती थी। इसमें धीरे-धीरे हिंदी खंड भी जुड़ा। आज तो हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु यूको बैंक अनेक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह निश्चित रूप से यूको बैंक की बहुत बड़ी उपलब्धि है। हिंदी राजभाषा के रूप में निरंतर गति से सतत प्रवाहमान है। जो बीज बैंकों के राष्ट्रीयकरण के तुरंत पश्चात रोपित किया गया था वही आज पल्लवित और पुष्पित हो रहा है। इसकी सघन छाया मन को सुकून देती है। इससे मन को शांति मिलती है, मन मधुर प्रफुल्लित हो नृत्य करने लगता है।

गृह पत्रिका के प्रारंभ में ही महामहिम श्री जगदीप धनखड़ राज्यपाल पश्चिम बंगाल तथा विश्व हिंदी दिवस के आयोजन की गरिमामई झलकियां देखने को मिली। माननीय श्री अतुल कुमार जी गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश सभी यूकोजन के लिए अत्यंत प्रेरणादायक था। कृषकों की आय दोगुनी करने की योजना में बैंकों की क्या भूमिका हो सकती है इस संबंध में कार्यपालकों के विचार पढ़ने को मिले। कविताओं के समावेशन से अंक में नई जान आ गई है। वर्क फ्रॉम होम एक नई विचारधारा है। डिजिटल बैंकिंग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। साइबर अपराध और उनकी रोकथाम पर भी आलेख है। विश्व पुस्तक दिवस पर एक लेख है। इस अंक में भाषा सौहार्द दिवस पर एक भावनात्मक लेख है। इसके साथ ही भारत की संस्कृति के प्रतीक स्वरूप गुजराती, मलयालम, ओड़िया भाषाओं के रंग-बिरंगे पुष्प हैं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, संविधान दिवस का पालन, बैंक का स्थापना दिवस समारोह, गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम, बैंक के संस्थापक स्वर्गीय जीडी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, यूको राजभाषा सम्मान, तथा लोकप्रिय हिंदी कार्यक्रम के आयोजन से संबंधित अनेक रंगीन सजीव चित्र हैं। ओड़िया, हिंदी, अंग्रेजी के कुछ वाक्यांश दिए गए हैं। अंत में मलयाली व्यंजन का रसास्वादन भी मिलता है। पत्रिका के अंतिम चित्र से यह ज्ञात होता है कि **श्री शरद कुमार जी**, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त का आगमन भी अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ के संयोजन में हुआ। क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में उनका प्रभावी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार के अनेक सुगंधित पुष्प इस गृह पत्रिका में हैं। यह पुष्पों की मनमोहक फुलवारी सा प्रतीत होता है। इस समय मुझे बिहारी के दोहे की एक उक्ति याद आती है

"शतसैया के दोहरे ज्यों, नावक के तीर
देखन में छोटे लगै, घाव करे गंभीर"

यूको बैंक की यह पत्रिका भले ही 52 पृष्ठों की है परंतु इसका प्रभाव पाठकों पर अमित रूप से पड़ता है। इससे राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए एक प्रेरणा प्राप्त होती है। पत्रिका की रंग बिरंगी आकर्षक छपाई मनमोहक प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय हैं। इसके लिए संपादक मंडल हार्दिक बधाई का पात्र है।

सुभाष चंद्र पालीवाल
सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
14 जनवरी 2000

जनता की सेवा- जनता की भाषा में- इस बार तेलुगू

	तेलुगू	हिंदी	अंग्रेज़ी
1	मी पेरु एंटी ?	आपका नाम क्या है ?	What is your name ?
2	मीरु एककड़ा उंटारु ?	आप कहां रहते है ?	Where do you live ?
3	मी आरोग्यम एला उंदी?	आपकी तबीयत कैसी है?	How is your health ?
4	कुरचोंडी	आइए , बैठिए ?	Please be seated ?
5	टी कानी इंकेमाइना कानी तीसुकुंटारा ?	चाय लेंगे या और कुछ?	Tea or something else ?
6	नेनु मीकु एला सहायम चेयागलनु ?	क्या मैं आपकी मदद कर सकता (ती) हूँ ?	May I help you ?
7	मीरु हिन्दी लो माट्लड़ागलारा ?	क्या आप हिंदी बोल सकते (ती) हैं ?	Can you speak Hindi ?
8	मी अकाउंट एय शाका लो उंदी ?	आपका खाता किस शाखा में है ?	In which branch do you keep your account ?
9	मीरु मी केवाईसी फारुम निमपारा ?	क्या आपने केवाईसी फार्म भर दिया है ?	Have you filled up your KYC form ?
10	मीरु चाला ओथिडि उन्नटु उन्नारु, एमाइनदी ?	आप बहुत परेशान लग रहे हैं। क्या बात है ?	You are much stressed. What is the matter ?
11	मीरु ऋणम योक्का नियामा निबंधनालु पूर्तिगा चादिवारु कदा ?	आपने ऋण की शर्तों को पढ़ लिया होगा ?	You have definitely gone through the terms and conditions ?
12	मी व्यापरम योक्का वार्षिका टर्नओवर एनथा ?	आपके कारोबार का वार्षिक टर्न ओवर कितना है ?	How much is your business annual turnover ?
13	रेपु मेमू मी कर्मागरम चूसतामू .	हम लोग कल आपका कारखाना देखने जाएंगे।	We Shall visit your factory tomorrow
14	ई डिपोसिट स्कीम मीकू सरिपोथुंदि	हमारे बैंक की यह जमा योजना आपके लिए उपयुक्त होगी।	This deposit scheme of our bank shall suit you.
15	मी एटीएम डेबिट कार्ड सिधमगा उंदि।	आपका एटीएम डेबिट कार्ड तैयार है।	Your ATM debit card is ready
16	ई विषयम लो पूर्ति समाचारम कावाली.	हमें इस संबंध में विस्तृत सूचना चाहिए ।	We require detailed information in this matter.
16	मेल्लगा मात्लडंडी।	कृपया धीरे बात करें।	Please talk quietly.
17	मी पदोन्नति की शुभाकांक्षालु।	पदोन्नति के लिए आपको बहुत -बहुत बधाई ।	Congratulations on your promotion
18	ई पनि पूर्ति चेय्यडानिकी सहायम चेय्यंडि।	कृपया इस कार्य को करने में आप हमें सहयोग दें।	Please help us in completing this job
19	मी विलुवइना सूचनलकी कि धन्यवादालू।	मूल्यवान सुझाव के लिए आपका धन्यवाद।	Thanks for your valuable suggestion
20	मी नान्नगारु चाला संवास्तरालु माँ शाखा योक्का मंचि खातादारुडिगा उन्नारु	आपके पिताजी हमारे बैंक के पुराने तथा सम्मानित ग्राहक थे।	Your father was very old and valued customer of our branch.

जब मोबाइल बन जाए बैंक

यूको मोबाइल बैंकिंग कहीं भी कभी भी

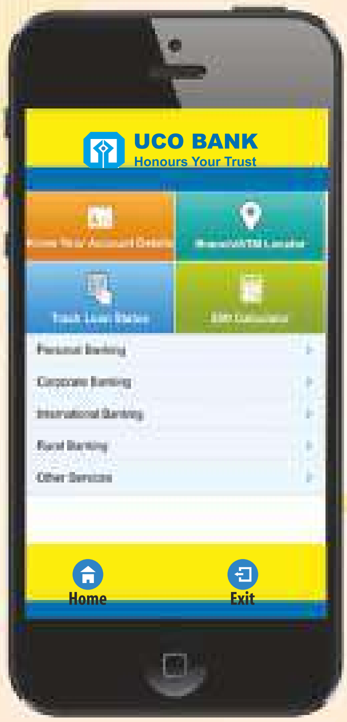

- मोबाइल से मोबाइल में / मोबाइल से खाते में राशि अंतरण
- मोबाइल रीचार्ज
- IMPS तुरन्त भुगतान सेवा (आईएमपीएस)
- एटीएम / शाखा की जानकारी
- एटीएम कार्ड ब्लॉक करना
- मिनी स्टेटमेंट 0 92131 25125
- बैलेंस एनक्वायरी 0 92787 92787

मिस्ड कॉल दीजिए 0 9210222122 पर यूको होम लोन के लिए
मिस्ड कॉल दीजिए 0 9210422122 पर यूको कार लोन के लिए

इनमें उपलब्ध है :

Android | Windows | Apple iOS | Blackberry | Java | WAP | USSD

सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए अपना मोबाइल नं. रजिस्टर करवाएं

वेबसाइट : www.ucobank.com

निःशुल्क हेल्पलाइन : 1800 103 0123

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

मुद्रक- पॉपुलर बाइंडर एंड को, 100/5 /1A, एस एन बनर्जी रोड, कोलकाता-14, फोन- 907682556, ई-मेल popular_binder@yahoo.in